43-79

प्रेम पत्र

प्यारे किसान चरणसिंह जी,

सादर प्रणाम।

मुझे आपसे तब से प्यार है जब आप असली प्रधानमंत्री थे और नकली लोग प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठे थे। लेकिन आज मुझे आपसे दिली हमदर्दी है क्योंकि न केवल आपके किसान बल्कि आप स्वयं सड़कें नाप रहे हैं।

किसान का नेता होने के नाते आपका सबसे बड़ा फर्ज है बीज बोना। मुझे खुशी है कि किसान रैली में आपने जनता पार्टी में "फूट के बीज" बोने की सलाह किसान भाइयों को दी है, जिसका पौधा छः महीने के अन्दर-अन्दर उग कर तैयार हो जायेगा और बड़े -बड़े नेता अपनी बेबसी पर पछतायेंगे।

अब तो यह सब लोग जान गये हैं कि मोरार जी भाई के आपको कैबिनेट में न लेने के दो कारण थे, एक आपका चेला राजनारायण, दूसरा कान्तिभाई देसाई। हो सकता था कि यदि आप राजनारायण को छोड़ने के लिए तैयार हो जाते तो मोरार जी भाई कान्तिभाई को छोड़ने पर मजबूर हो जाते। इस "चेले" और 'बेटे' के, गोरखधंधे में न केवल आप बल्कि जनता पार्टी और देश फंस गया है।

यदि आप आगे का रास्ता सही करना चाहते हैं तो न केवल किसान मज़दूर पार्टी बनानी पड़ेगी, देश की नेता "(जो आज जेल के सींखचों में से)" किसान रैली देख रही हैं, उनसे सुलह करनी पड़ेगी क्योंकि अब मोरार जी भाई से जनता पार्टी में आपका निबटारा नहीं हो सकता।

मेरा सुझाव यह है कि अब आपको मोरार जी भाई से हरियाणा, पंजाब और उत्तर प्रदेश के खेतों में ही निबटना पड़ेगा।

आपका चिल्ली

मुख्य पृष्ठ पर

एक मछली के लिए बहुत किया इन्तजार
आठ घन्टे और चार मिनट सब गये बेकार,
सब गये बेकार अचानक एक फंस गई,
बाकि सब मछलियां एक क्रेन ले गई।
नहीं बची कोई मछली अब किनारे के पास
एक से तो क्या बने सिलबिल हुआ उदास,
सिलबिल हुआ उदास याडी अब क्या कहेगा
एक मछली से भला क्या पेट भरेगा?

अंक : ४३, २८ दिसम्बर से ३ जनवरी १९७९ तक
वर्ष : १४

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दें
छमाहीः २५ रु०
वार्षिकः ४८ रु०
द्विवार्षिकः ९५ रु०

लेखकों से

निवेदन है कि वह हमें हास्यप्रद, मौलिक एवं अप्रकाशित लघु कथायें लिखकर भेजें। हर प्रकाशित कथा पर 15 रु० प्रति पेज पारिश्रमिक दिया जायेगा। रचना के साथ स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना के लिए पर्याप्त डाक टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा संलग्न करना न भूलें। —सं०

विजय कुमार गुप्ता, श्री गंगानगर (राज०)

प्र० : उनको आता है प्यार पर गुस्सा, हमको गुस्से पें प्यार आता है ?

उ० : मार देती है चपत, तैंश में आकर मैडम,
थैंक्यू बोल के हम, हाथ चूम लेते हैं।

पंकज गर्ग, सँहारनपुर

प्र० : प्यार में शिकस्त खाने के बाद दुनिया नीरस और जिन्दगी बोझिल क्यों लगने लगती है।

उ० : छोड़ निराशा कीजिए अगला एग्रीमेंट,
फंसे दूसरी प्रेमिका, फिर आ जाय करेंट।

अशोक जौहर नीलम, (देहरादून)

प्र० : पत्नी घर में एमर्जेन्सी लगा दे तो पति को क्या करना चाहिये ?

उ० : लात मार करके उसे, ढूंढो दूजा काम,
सफल हुये इस चाल से, श्री जगजीवन राम।

खुशाल चंद सोनी, अशोक कुमार, पनागर

प्र० : काका जी, यदि भाग्य पर लक्ष्मी की कृपा होती है तो दुर्भाग्य पर ?

उ० : भाग्य फले तो लक्ष्मी बरसाती है नोट।
आए जब दुर्भाग्य तो शनि जी मारें चोट ॥

लक्की-रूबी, पटियाला

प्र० : हमारा मास्टर जैनी होते हुए भी हमको पीटता है, क्यों ?

उ० : हिंसा का क्या अर्थ है, जानत हैं सब मैन।
मार पीट वाला भला, कब हो सकता जैन ॥

उज्ज्वल कुमार, गंज बासौदा (विदिशा)

प्र० : लड़कियों को, कुछ लड़के घूर-घूर कर क्यों देखते हैं ?

उ० : जैसी जिसकी भावना, वैसी ही मन पर छाप है।
देखने में कुछ नहीं, पर घूरने में पाप है ॥

औतार सिंह छाबड़ा, जयपुर (राज०)

प्र० : शादी से पहले रामचंद्र जी ने धनुष तोड़ा, शादी के बाद क्या तोड़ा ?

उ० : सीता से विवाह करने को शिवजी का धनु तोड़ दिया।
शादी के पश्चात् राम ने, रावण का सिर फोड़ दिया ॥

भूपेंद्र जौहरी शीतल, मंदसौर (म० प्र०)

प्र० : आपके कोर्ट में आती हैं सिर्फ भतीजों की अर्जियां,
क्या बिलकुल जिज्ञासा हीन हैं, आपकी भतीजि

उ० : प्रश्न नहीं भेजती हैं, इसलिए कुछ लल्लियां
क्योंकि लल्ला जी उड़ाते, लल्लियों की खिल्लि
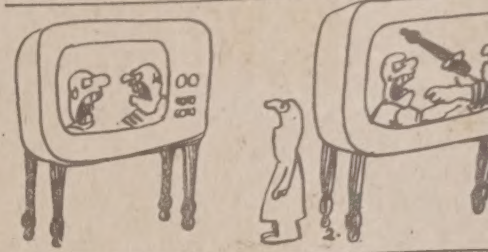
देवेन्द्र कपूर, फीलखाना, कानपुर

प्र० : पाप करनेवाले को नर्क, पुण्य करने वाले को नहीं करता उसे क्या मिलता है, काका ?

उ० : अच्छा अथवा बुरा जो नहीं करता कुछ व्रर्क
लटका रहता बीच में, स्वर्ग मिले नहिं नर्क

अमर चंद सोनी, बीकानेर

प्र० : आपने अपना उपनाम काका ही क्यों रक्खा, दा

उ० : मारधाड़ की कला में, 'दादा' हैं बदनाम।
'काका' का सम्मान है, करते सभी प्रणाम।

हरगुन जसवानी, मंडला (म० प्र०)

प्र० : इन्सान किसके सामने हार जाता है ?

उ० : पत्नी से कुछ कहो तो सुनो एक की चार
काकी करती तर्क जब, काका जाते हार

इंद्रजीत सिंह भाटिया, महू (म० प्र०)

प्र० : इश्क के मरीज को क्या-क्या चीजें अच्छी न

उ० : आशिक जी पर इश्क का जब हो भूत सवा
बहिन-बंधु, माता-पिता, सब लगते बेका

रामसिंह वर्मा, बहरामपुर (म० प्र०)

प्र० : काका जी, फोटो में आप संत-जैसे लगते वास्तव में महात्मा हैं ?

उ० : काकी जी हैं कामिनी, काका उनके कंत।
अभी वाणप्रस्थी हुए, नहीं महात्मा-संत ॥

केकल प्रकाश, काशीपुर (नैनीताल)

प्र० : प्रेमियों को चाँदनी रात अच्छी लगती है

उ० : बात-चीत को चाहिए, चमक-चाँदनी र
और काम को चाहिए, घुप्प अंधेरी र

अपने प्रश्न
केवल पोस्ट
कार्ड पर
ही भेजें।

काका के
दीवाना सा
८-बी, बहादुरशा
नई दिल्ली-

43-79
रोपकारी
रोपकारी भैया
मन्टू ? कहो कैसे हो ?
सुना है तुम्हारी सास भी आ गई है तुम्हारे साथ रहने ?
वही तो रोना है, पहले ही नौकरी न होने की वजह से परेशान हूँ, अब सास का भी भार कैसे सम्भालूंगा
एक नौकरी है जो मिल सकती पर तुम्हारी सिफारिश की जरूरत सुरक्षा अफसर का स्थान है, जाए तो सारे दुःख दूर हो जाएं।
हां हां क्यों नहीं...
लो फैक्ट्री के मालिक के नाम लिख दिया है, बाकी तुम सम्भालो।
परोपकारी तुम्हारा एहसान मैं कभी नहीं भूलूंगा।
दिन बाद
परोपकारी तुम्हारी सिफारिश से मेरी सास को नौकरी मिल गई, भला हो तुम्हारा ?
तुम्हारी सास को ?
और क्या ? सुरक्षा अफसर का काम तो कोई हट्टा कट्टा पहलवान ही कर सकता है न ?
THE NATIVE
ात-बे-बात की
तुम कोई भी शैतानी करते हो तो क्रोध के मेरा एक बाल सफ़ेद हो है-
और तुम हो कि शैतानियों से बाज नहीं आते।
ओह। आप ने भी बचपन में खूब शैतानियाँ की होंगी तभी तो नानी जी के सारे बाल सफेद हैं।

हमारे लाडले फिल्म स्टार

आपको पता होगा कि बेंकाक में एशियाई खेल मुकाबला हो रहे हैं। खेलों में भारत की जो स्थिति है वह सबको मालूम है। पुराने खिलाड़ी ढलान पर हैं और नई प्रतिभायें नजर आ नहीं रही हैं। खेलों के भविष्य के बारे में यही कहा जा सकता है कि दूर-दूर तक घोर अंधेरा नजर आता है। इधर हम देखते हैं कि फिल्मों में हमारे हीरो क्या-क्या करतब दिखाते हैं बड़े-बड़ों को फूंक मार कर उड़ा देते हैं। इस फिल्मी प्रतिभा को ध्यान में रख एशियाई खेलों के लिए क्यों न दल का चुनाव किया जाये। हमारे फिल्म स्टारों को भी आटे दाल के भाव का पता लग जायेगा। फिल्मी प्रतिभा के अनुसार हमने एशियाई खेलों के लिए भारतीय दल का जो चुनाव किया है उसका परिचय पढ़िए—

निशाने बाजी

निशाने बाजी के मुकाबलों में हमारे स्टंट हीरोओं में से किसी को भी भेजा जा सकता है। डैनी हो सकता है, शत्रु हो सकता है अथवा महेन्द्र सन्धु। हमने देखा है कि फिल्मों में गोलियों की बौछार भी हो तो भी हीरो को नहीं लगती जबकि हीरो का निशाना कभी गलत नहीं होता। हमारे हीरो इस रिकार्ड के आधार पर दो सौ में से दो सौ सही निशाने लगा कर गोल्ड मैडल ला सकते हैं। (एक ही सावधानी बर्तनी होगी कि अम्पायर निशाने बाजी टेलीविजन मानीटरींग द्वारा कमरे में बैठ कर देखें। आसपास खड़े हों तो उनके सिर में गोली लगने का खतरा है। फिर हमारे स्टार को गोल्ड मैडल की जगह कारावास ही मिलेगा।

रेसिंग

रेसिंग में तो भारत फिल्मी स्टैंडर्ड के अनुसार विश्व चैम्पियन है। फिरोज खान ने अपराध फिल्म में जर्मनी में कार रेस जीती थी। और मैं आशिक हूं बहारों का में राजेश खन्ना स्विटजरलैंड में कार रेस जीतता है। इन दोनों को ही बेंकाक भेजना चाहिये। जो विश्व के प्रतिद्वन्द्वियों को हरा चुके हों उनके लिये एशियाई प्रतिद्वन्द्वियों को हराना कोई मुश्किल नहीं होना चाहिये! (लेकिन इससे पहले यह पता करना जरूरी होगा कि इन दोनों को ड्राइविंग करना आता भी है या नहीं! क्योंकि फिल्मों में डबलों द्वारा या रेसिंग के विदेशी फिल्मों के सीन चुरा कर अपनी फिल्मों में जोड़ा जाता है।)
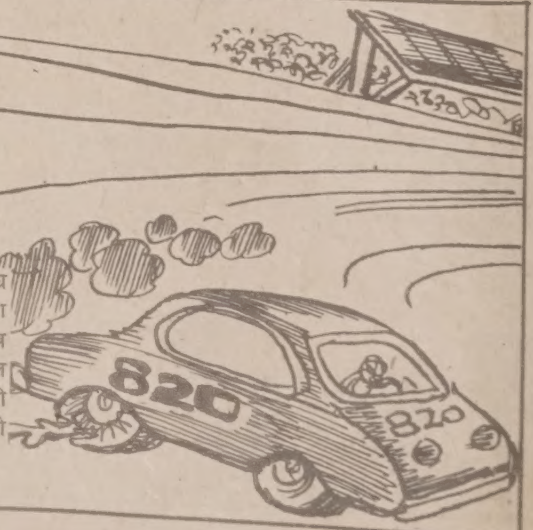
मिट्टी से सोना
और हमारे खेल दल में कानन कौशल का होना बहुत जरूरी है। हमने कानन कौशल के धार्मिक पिक्चरों में अजीबो-गरीब कमाल देखे हैं। एशियाई खेलों के बाद कानन कौशल हमारे दल को लेकर तीर्थ यात्रा पर जा सकती है। वहाँ सुदेश कुमार जैसे घटिया एक्टर के साथ भजन गाकर भगवान को रिझा देगी, परिणाम क्या होगा? भारतीय टीम को रजत कांस्य, मिट्टी, लकड़ी आदि के जितने भी पदक प्राप्त हुये होंगे। वह भगवान की महिमा से स्वर्ण पदकों में बदल जायेंगे।
हॉकी
स्वर्गीय चिनप्पा देवर की कृपा से हमारे पास अविश्वसनीय करतब करने वाले फिल्मी जानवर हैं, हाथी, घोड़े, गाय, सांप, शेर और बकरे। ये अपना कमाल दिखा सकते हैं। उदाहरण के तौर पर मेरा रक्षक के बकरे को लीजिये। इसे साथ ले जाकर ट्रेनिंग की जा सकती है। जब भी भारत के विरुद्ध पैनल्टी कार्नर हो रहा हो। तो बाल को हिट करने से पहले यह बकरा स्ट्राइकर को पीछे से जाकर सींग मार दे। (रेफरी बकरे को पीला कार्ड ही तो दिखायेगा। उससे बकरे का क्या बिगड़ेगा? एक सींग अम्पायर को भी मार देगा, हां!)
270
मैराथन दौड़
मैराथन दौड़ के लिये ऋषि कपूर, नीतू, रीना, जरीना, सचिन आदि रोमांटिक जोड़े ठीक रहेंगे। हमने फिल्मों में देखा है, यह जोड़े युगल गान गाते हैं तो पहले क्षण कश्मीर में होते हैं, दूसरे ही क्षण बम्बई में। १५०० कि० मीटर यह एक क्षण में तय करते हैं। यह स्पीड ध्वनि की गति से ६० गुणा अधिक है। इनको कौन पीट सकेगा? (होगा यह कि सौ मीटर दौड़ते-दौड़ते यह सारे हांफते-हांफते गिर पड़ेंगे। मैदान में ही आक्सीजन के सिलेंडर इनके मुंह से लगाने पड़ेंगे, सोना चांदी छोड़िये भारत को रद्दी अखबार का बना मैडल भी प्राप्त नहीं होगा।)
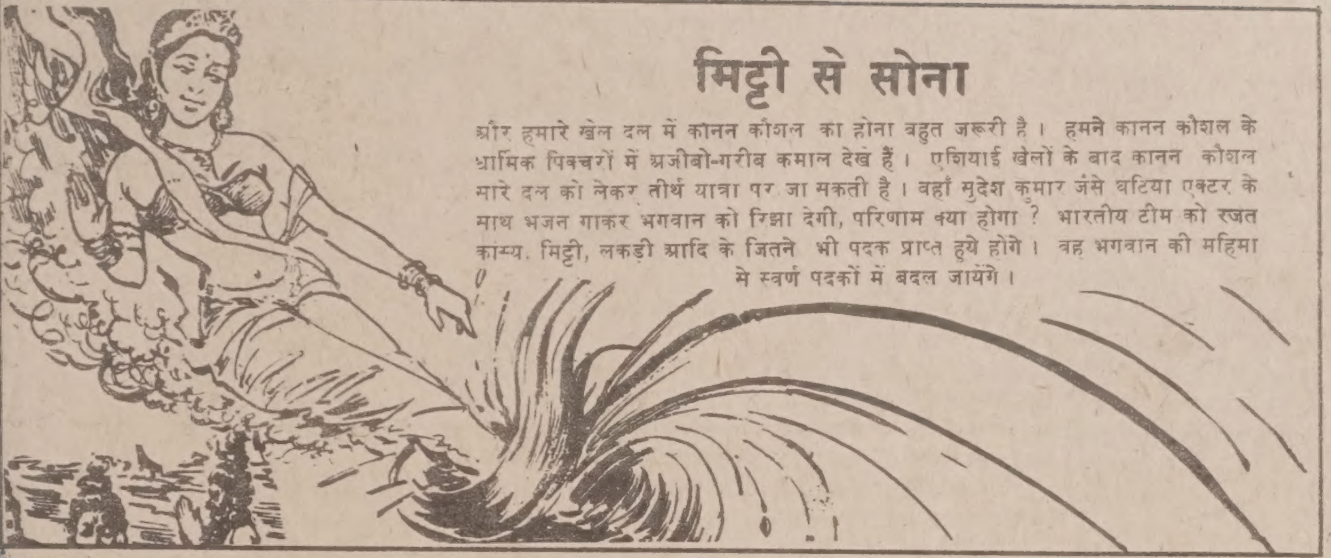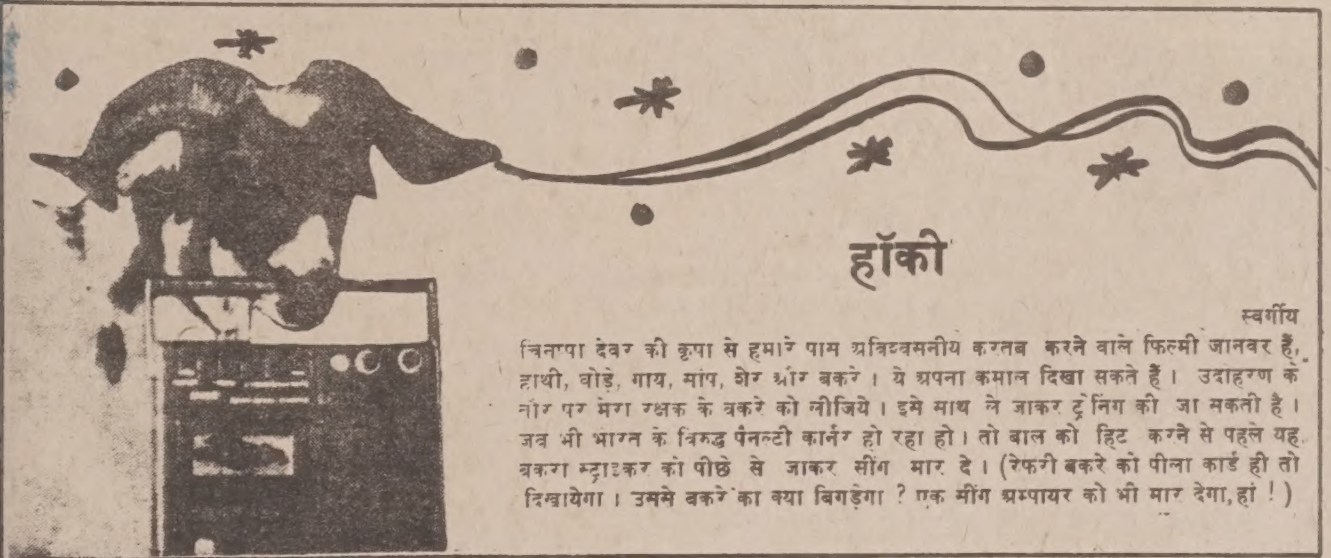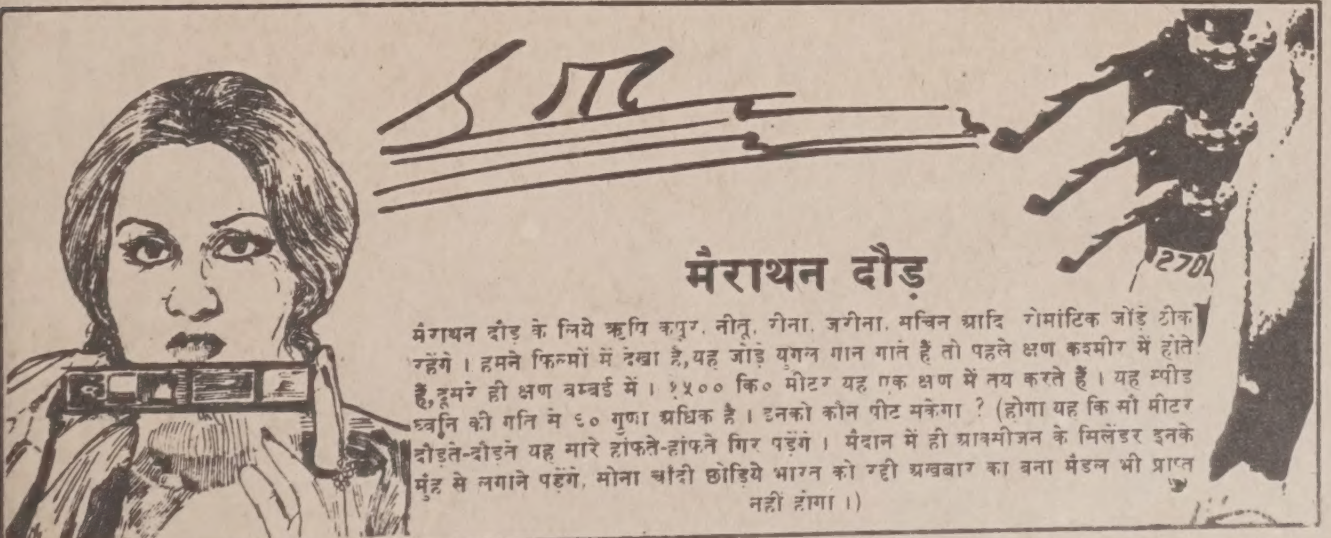
जूडो कराते

जूडो कराते के लिये अमिताभ बच्चन से अधिक अच्छा मास्टर हमें कौन मिलेगा। दर्जनों फिल्मों में अमिताभ ने अकेले जूडो कराते के दांव दिखा कर बीस-बीस चालीस-चालीस गुंडों के झुंडों को मार भगाया है। गोल्ड मैंडल जीत लाना तो उसके बायें हाथ का खेल रहेगा। क्योंकि इन मुकाबलों में तो एक समय में एक प्रतिद्वन्द्वी से ही मुकाबला होगा। (होगा यह कि पहले मुकाबले के पहले ही दौर में कोरिया या जापान के प्रतिद्वन्द्वी का पहला ही वार पड़ेगा तो इतने तारे नजर आयेंगे कि उनसे एक नये ब्रह्मांड की रचना की जा सकेगी। यह भी सम्भव है कि हजरत बेहोश हो जायें और दो हफ्ते बाद होश आने पर सिर पर जया को पंखा झलता और पिता बच्चन को चारपाई के चारों ओर घूम कर प्रार्थना करते नजर आयें।)

फ्री स्टायल कुश्ती
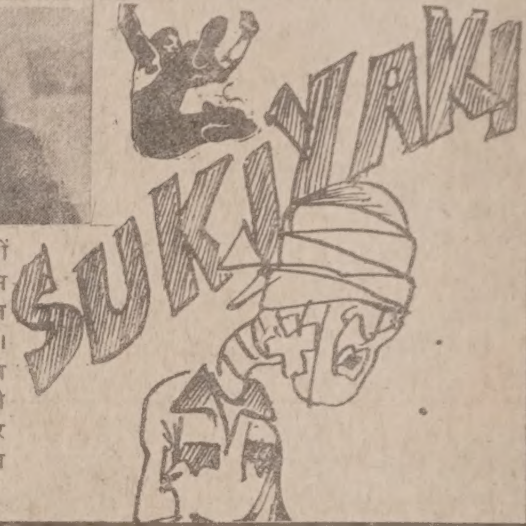
मारपीट यान फ्री स्टायल कुश्ती के लिये धर्मेन्द्र को भेजना ठीक रहेगा क्योंकि हमने धर्मेन्द्र को अपने से तिगुने बड़े शेट्टी को पीटते देखा है। यही नहीं अमजद खां को भी कई बार पीटा है ! फ्री स्टायल का गोल्ड मैंडल अपना। (असल में होगा यह कि पहले ही मुकाबले में धर्मेन्द्र की ऐसी पिटाई होगी कि एशियाई खेल स्वयं भारत को चेतावनी देगा कि ऐसे लल्लू पंजू नौसिखियों को फिर भेजेगा तो भारत को दोबारा अंतर्राष्ट्रीय खेलों में भाग नहीं लेने दिया जायेगा। लौटने पर पट्टियों से लिपटे धर्मेन्द्र को हेमा भी न पहचान पायेगी।)

घुड़ सवारी

भारत में सामन्तवादी फिल्मों और राजे महाराजों की फिल्मों में हीरो लोग खूब घुड़सवारी और तलवार बाजी करते हैं। क्यों न इन्हीं लोगों को घुड़ सवारी और तलवारबाजी के मुकाबलों में भेजा जाये ! (यह तो होगा ही कम से कम कि इनके सिर फूटेंगे ! अच्छा होगा बीमारियों से छुट्टी मिलेगी।)

मनोज कुमार

फिल्म स्टारों से सजे हमारे दल में मनोज कुमार का होना अति आवश्यक है। मनोज ने अपनी उपकार फिल्म में यह साबित कर दिया था कि खेतों में पैदावार ज्यादा बढ़ाने के लिये, नेहरू, शास्त्री और महात्मा गांधी'''सॉरी सर महात्मा गांधी नहीं संजय गांधी क्योंकि आपातकाल में मनोज ने यही कहा था संजय गांधी ? सॉरी सर, जनता पार्टी जीतने के साथ ही मनोज कुमार ने संजय गांधी की जगह जे. पी. कहा। खैर, इन तीनों की मूर्तियां खेतों में लगनी चाहियें। हमें अब अगर एशियाई खेलों में जीतना है तो खेल के मैदानों में यह मूर्तियां खड़ी की जानी चाहियें। इस बात की मांग को लेकर मनोज एशियाई खेल संघ वालों से लड़ सकता है।
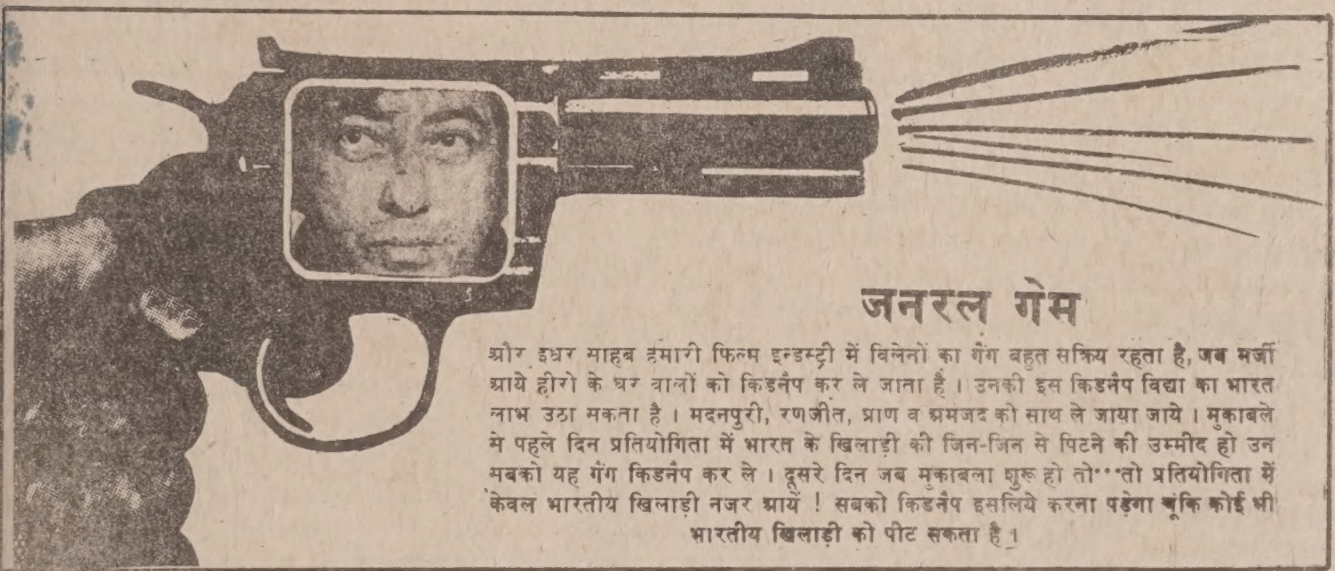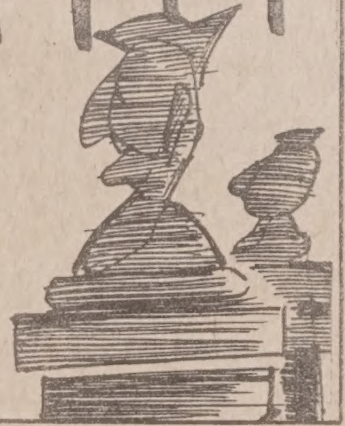
जनरल गेम

और इधर साहब हमारी फिल्म इन्डस्ट्री में विलेनों का गैंग बहुत सक्रिय रहता है, जब मर्जी आये हीरो के घर वालों को किडनैप कर ले जाना है। उनकी इस किडनैप विद्या का भारत लाभ उठा सकता है। मदनपुरी, रणजीत, प्राण व अमजद को साथ ले जाया जाये। मुकाबले मे पहले दिन प्रतियोगिता में भारत के खिलाड़ी को जिन-जिन से पिटने की उम्मीद हो उन सबको यह गैंग किडनैप कर ले। दूसरे दिन जब मुकाबला शुरू हो तो'''तो प्रतियोगिता में केवल भारतीय खिलाड़ी नजर आयें ! सबको किडनैप इसलिये करना पड़ेगा चूंकि कोई भी भारतीय खिलाड़ी को पीट सकता है।

अंतिम संदेश

हमने हर फिल्म में देखा है कि अबला मां सिलाई करके अपने होनहार बेटे का पालन-पोषण करती है। उसकी पढ़ाई-लिखाई में अपना सब कुछ न्यौछावर कर देती है और मजे की बात यह है कि जब भी परीक्षाफल आता है उसका बेटा प्रथम आता है। क्या यही चीज खेलों के मामले में लागू नहीं हो सकती ? आजकल जबकि पढ़ाई की कम और खेलों की ज्यादा महत्ता है। हमारा कहने का सारांश यह है कि उन्हीं लोगों को ऐशियाई खेलों के लिये चुना जाये जिनकी मांयें मजबूरी में सिलाई करके गुजारा चला रही हों। ऐसी मांओं के बच्चे जब पढ़ाई में प्रथम आ सकते हैं तो खेलों में प्रथम कैसे नहीं आयेंगे ? सबके सब गोल्ड मैडल ले आयेंगे। हमारा तो यहां तक विश्वास है कि यदि इस फार्मूले पर खिलाड़ी दल भेजा जाये तो इतने गोल्ड मैडल आयेंगे कि एक पूरा समुद्री जहाज किराये पर लेना पड़ेगा।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

प्रदीप सरवाला—दिल्ली : जब से दीवाना पढ़ रहा हूं आपका यही फोटो देखा है। अब तो आप इतने बूढ़े हो गये होंगे कि मुंह में एक भी दांत नहीं बचा होगा। अपनी आज की सूरत दिखाने से आप डरते हैं क्या ?

उ० : कभी हमारी सूरत इतनी बदली कि मुंह पर मक्खियां भिन-भिनाने लगें, तो हम अपनी तस्वीर बदल देंगे। अभी तक तो ऊपर वाले की दया से यह हाल है कि लोग कहते हैं :

हर अदा मस्ताना सर से पांव तक छाई हुई,
उफ, तेरी काफर जवानी जोश पर आई हुई।

रोशन व्यास—इन्दौर : मनुष्य अपने आपको बेवकूफ कब समझने लगता है ?

उ० : पता नहीं, आपके पत्र से तो अभी इसका कोई अन्दाजा नहीं हो रहा है।

गिरीश माखीजा—आगरा : आपका नाम चाचा बातूनी क्यों पड़ा ?

उ० : क्योंकि हम बहुत उल्टा-सीधा बोलते हैं। और जो कुछ हम बोलते हैं उसके बारे में हमें खुद कुछ पता नहीं होता कि इसका मतलब क्या है। यह अलग बात है कि हमारा नाम चाचा बातूनी न पड़ता तो चाचा राजनारायण पड़ जाता।

के० पी० गुप्ता—काशीपुर : अंकल, मैं परेशान हूं, शांति पाने के लिये कहां जाऊं ?

उ० : भगवान रजनीश के आश्रम में, वहां 'शांतियां ही शांतियां' आपके 'पास' होंगी, हार्ट 'फेल' करने वाली।

रमा कांत शर्मा—अलवर : श्री मोरारजी देसाई की नशाबन्दी पालिसी के बारे में आप का क्या विचार है ?

उ० : हमसे पूछने की बजाय यह प्रश्न उन मदहोशों से पूछिये जो कहते हैं :

दफन करना मेरी मईयत इसी मैखाने में,
ताकि मैखाने की मिट्टी रहे मैखाने में।

रवि बच्चन—इलाहबाद : चाचा जी, चेला राम की बोदी सदा खड़ी क्यों रहती है ?

उ० : क्योंकि उसकी बोदी उसके दिमाग के रेडियो का एरियल है।

जगदेव प्रसाद—बेलचढ़ी : आप प्रश्नों के उत्तर भोंपू से क्यों देते हैं ?

उ० : क्योंकि हमारे कम्पोजिटरों को नीची आवाज सुनाई नहीं देती।

किशन खन्ना—फड़बाजार : दीवाना लेट क्यों आने लगा है ?

उ० : अब तो समय पर आ रहा है।

महेश बग्गा, इन्दौर : सपनों में लड़कियां दिखाई दें तो क्या करूं ?

उ० : हमें तो पता नहीं, जनता पार्टी के बड़े नेताओं से पूछिये। उन्हें बहुत दिनों से सपनों में 'एक लड़की' दिखाई दे रही है।

चन्द्रभान अनाड़ी—जबलपुर : आपकी खूबसूरती का राज़ क्या है ?

उ० : अब तक तो आंखें थी, पर हमें पता है, अब यह आंखें हमारी खूबसूरती का बेड़ा गर्क करा देंगी। आज ही की बात है, हम अपने चेहरे पर कोल्ड क्रीम लगाना चाहते थे, पर पता लगा हम उस पर बूटपालिश लगा गये हैं।

राजेश जे० गांधी—बम्बई : यदि आपको किसी निर्जीव टापू पर छोड़ दिया जाये तो आप क्या करेंगे ?

उ० : हम वहां परिवार नियोजन की ऐसी स्कीम चालू कर देंगे जैसी हमारे देश में चालू है। फिर तीस साल बाद आप देखेंगे उस निर्जीव टापू की जनसंख्या पचास करोड़ हो गई है।

सज्जन कुमार ओर—बिसापुर : अपने बारे में और काका हाथरसी के बारे में कुछ बतायें।

उ० : हम अपने बारे में तो कुछ बता सकते हैं कि हम उनकी दाढ़ी का तिनका हैं।

नरेन्द्र कुमार बाबा—हांसी : दोस्त कितने प्रकार के होते हैं ?

उ० : आजकल तो भगवान अपने कारखाने में एक ही प्रकार का माल बना रहा है। इसके लिये कहा गया है :

हुए तुम दोस्त जिसके, दुश्मन उसका आसमां क्यों हो ?

टिकू मांगा, बलविन्द्र अरोड़ा—मोगा : किसी मतलबी से कैसे छुटकारा पाया जाए ?

उ० : यदि वह मतलबी दीवाना है, तो एक रुपया देकर छुटकारा पा लीजिये।

शैलेन्द्र सिंह बबलू—भानपुर : अगर आपके भतीजे आपसे रूठ जायें तो आप क्या करेंगे ?

उ० : उन्हें ये शेर सुनायेंगे :

सोच कर गम दीजिये ऐसा न हो,
आपको करनी पड़े गमख्वारियां।
कर न बैठो तुम कोई ऐसा इलाज,
मोल ले लो कुछ नई बीमारियां।

पवन खत्री, "बैरागी"—इन्दौर : दिल के मंदिर में किसकी पूजा होती है ?

उ० : "नकद नारायण" की जिसकी कृपा दृष्टी आजकल जयप्रकाश नारायण पर है।

सुरेश खुराना, पप्पी—जीन्द : जीवन में तीन खतरनाक मोड़ कौन-कौन से माने जाते हैं ?

उ० : पहला, विवाह करने का फैसला करना, दूसरा, कभी विवाह न करने का फैसला करना और तीसरा पहले दो फैसलों में से किसी एक पर इमानदारी से अमल करना।

मोहन मालपानी—इन्दौर : नफरत मुहब्बत की पहली सीढ़ी है, तो दूसरी सीढ़ी कौन सी है ?

उ० : जिस सीढ़ी पर चढ़ने के बाद पता चलता है, कि मन्नी पर चढ़ गये हैं।

कूपन

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली ११०००२

बन्द करो बकवास

जीवन में हमसफर मिलते तो हैं जरूर, पर खो जाते हैं चल के थोड़ी दूर...

बन्द करो बकवास, और मुझे मेनहोल में से निकालो।

तुझे क्या सुनाऊं ऐ दिलरुबा तेरे सामने मेरा हाल है...

बन्द करो बकवास, कितनी बार कहा है पार्क में रियास न किया करो सारे गधे इकट्ठे हो जाते है।
हीं
हां

पूछो न कैसे मैंने रैन बितायी...

बन्द करो बकवास एक रात ही मुन्ने को साथ सुला के ये हाल हो गया है तुम्हारा ?
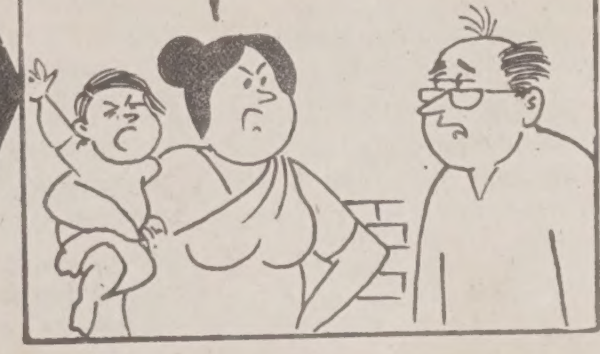
नया धारावाहिक उपन्यास

सुबह का तारा

लेखक—संगीता

'सजा तो मिल गई तुम्हें !' रंजन मुस्करा कर बोला, 'अन्तरात्मा की धिक्कार से बढ़कर क्या सज़ा हो सकती है ? सच बात यह है कि मैं स्वयं भी अपराधी हूं। मैंने भी तुम्हें अपने प्यार के बारे में नहीं बताया, आज बता दूंगा। बताऊंगा क्या उस लड़की से मिलाऊंगा। हम लोग उसी के घर चल रहे हैं।'

'तो यह समझ लूँ कि आपने मुझे क्षमा कर दिया !' सुशील ने बड़े प्यार से रंजन के कंधे पर हाथ रखकर कहा।

'हां यार, इसमें क्षमा की क्या बात है ? प्यार का चक्कर होता ही ऐसा है। बड़ी मुश्किल से तो हिम्मत पड़ती है किसी से कहने की।' रंजन बोला, 'यह मधु किसकी लड़की है ? नरेन्द्र सिन्हा की तो कोई लड़की इतनी बड़ी नहीं है।'

'मधु भोलू की इकलौती लड़की है और वह नूरपुर गाँव की रहने वाली है। लेकिन बचपन से ही सिन्हा साहब के यहाँ रहती है। उनके घर का कामकाज भी करती है और पढ़ती भी है। जितनी सुन्दर है, उतनी ही पढ़ने में तेज भी है। इंटर फाइनल में है। आप बात करेंगे तो आपको लगेगा कि···।'

'तुम्हें यह विश्वास है कि वह तुम्हें इतना ही चाहती है जितना तुम उसे चाहते हो ?'

'जी !'

तभी कार एक इमारत के सामने पहुंचकर रुक गई। रंजन सुशील से बोला—

'आओ तुम्हें कल्पना से मिलाएं।'

'वह यह साहब···!'

'साहिबा !' रंजन जल्दी से बोला, 'मेरी प्रेमिका का नाम तुम्हें बड़े सम्मान से लेना चाहिए।'

सुशील हंसने लगा।

लोहे के जंगले का एक फाटक था। सड़क से पांच फुट ऊंचा, छोटा-सा चबूतरा था जिससे इमारत का आरम्भ होता था। चबूतरे पर एक लड़का खड़ा था। रंजन को देखते ही वह भागा। रंजन जैसे ही चबूतरे से फाटक के अन्दर पहुंचा तो सुशील को एक लड़की दिखाई दी, जिसके होठों पर फैली हुई मुस्कराहट ने दोनों का स्वागत किया। उसकी उम्र लगभग अट्ठारह वर्ष की थी। रंग गेहूंआ था लेकिन खिलता हुआ और दमकता हुआ। बड़ी-बड़ी मासूम आंखें, घने काले बाल, लम्बा कद और छरहरा बदन। होठों को लिपिस्टिक की आवश्यकता ही नहीं थी।

उसने कमरे का दरवाजा खोला और अन्दर आने का इशारा करती हुई कमरे में चली गयी।

'यही देवी जी हैं जिनके बारे में आप कह रहे थे ?' सुशील ने पूछा।

रंजन अनसुनी कर गया।

कमरे में आकर उसने लड़की से कहा—

'कल्पना ! यह सुशील है। इस इतनी बड़ी दुनिया में मेरे इकलौते मित्र ! हर रिश्ते के बारे में मेरी अपनी धारणा है। दोस्ती के रिश्ते से अधिक न तो कोई रिश्ता मजबूत होता है न पवित्र; और सुशील ! ···यह कल्पना है, यह नाम मैंने रखा है इनका।'

कल्पना ने मुस्करा कर नमस्ते की और बोली—

'आपके बारे में रोजाना इतना सुनती रही हूं कि आपको आज देखकर ऐसा नहीं लगता कि हम पहली बार मिल रहे हैं।

सुशील ने रंजन की ओर देखा जो मुस्करा रहा था। फिर सुशील ने कल्पना से कहा—

'यह रंजन भाई का स्नेह है। मैं तो यही कहूंगा कि 'जिक्र मेरा मुझसे बेहतर है कि इस महफिल में···।' वैसे सच बात [...] है कि इस दुनिया में रंजन भाई के सिव[...] मेरा और कोई नहीं है।'

'यही बात यह आपके लिए कहते [...] यह तो वही हुआ कि मन, मन का प्र[...] बिम्ब होता है।'

'कल्पना के बारे में बहुत-सी ब[...] बताना भूल गया था,' रंजन जल्दी से बो[...] 'पहली बात तो यह है कि कल्पना हिन्दी [...] एम० ए० और कवयित्री भी है। इसीलि[...] तुम्हें थोड़ी-थोड़ी देर बाद हिन्दी की क[...] नायें और उदाहरण जबर्दस्ती सुनने पड़ें[...] दूसरी बात यह कि इसे खट्टी चीजें ब[...] पसन्द हैं। ये दोनों बातें याद रखोगे [...] अच्छी निभेगी।'

सुशील मुस्कराया। फिर हंसती [...] कल्पना की ओर देखकर बोला—

'यह तो अच्छा हुआ। मुझे भी मि[...] अच्छा नहीं लगता।'

'क्यों ?'

'ज्यादा मिठास से तबियत बोझिल [...] जाती है।' सुशील बोला, 'मिठाई ज[...] खराब हो जाती है। जिन्दगी में मिठास [...] मिठास रहे तो गड़बड़ हो जाती है। थो[...] सा खट्टापन भी चाहिए।'

'खटास से ही मिठास पैदा होती [...] कल्पना धीरे से बोली।

'अरे बाप रे ! मैं तो चला !'

रंजन की इस बात पर सभी हंस प[...]

सुशील मुस्करा कर बोला—

'अपनी राजी-खुशी की चिट्ठी लि[...] रहियेगा। मैं तो कुछ खाए बिना जा[...] नहीं।'

कल्पना बोली—

'पतियां मैं कैसे लिखूँ, हे सखि। लिखी [...]
जा[...]
कलम फरत मेरी कर ऐंचत, चुप भी [...]
न जाय[...]

'लगे हाथों कवि का नाम भी बता दीजिए !' सुशील ने याचना-भरे स्वर में कहा।

अचानक अन्दर से भाभी एक ट्रे में दही-बड़े, मटर की चाट, उबले चने लिए आ पहुंची।

सुशील ने कल्पना की ओर देखा। फिर ट्रे की ओर ललचाई नजरों से देखते हुए बोला—

'यह हमारे लिए ही है ना ?'

'आप लोग कहाँ कष्ट करेंगे ?' कल्पना बोली।

'लेकिन आप अकेली को भी तो कष्ट उठाते नहीं देखा जा सकता।'

और कहकहों के बीच जब नाश्ता खत्म हुआ तो शाम हो चुकी थी !

जब दोनों कल्पना की कोठी से निकले तो रंजन ने कहा—

'मेरा विचार है कल्पना से मिलकर तुम्हें खुशी हुई है।'

'अत्यधिक। आपके चुनाव की प्रशंसा करनी पड़ेगी। मेरा विचार है कि आप भी मधु से मिलकर खुश होंगे।'

'इसकी क्या गारण्टी है कि वह भी मुझसे मिलकर खुश होगी ?'

'क्या दुनिया में ऐसा भी कोई है जिसे आपसे मिलकर खुशी न हो ?' सुशील ने कहा, 'वैसे मधु जानती है कि आप मेरे लिए क्या हैं ?'

'भई, उसे नरेन्द्र सिन्हा के यहाँ से हटाओ।'

'मैं भी यही सोच रहा हूं।' सुशील ने कहा, 'एक बात—कल्पना के घर में कोई आदमी दिखायी नहीं दिया।'

'कल्पना के भाई साहब कहीं गये हुए हैं। पिताजी कलकत्ता में रहते हैं। घर में कल्पना और उसकी भाभी रहती हैं। मां का देहान्त हो चुका है।'

'आप मधु से मिलने चलेंगे ? या मैं उसे घर ले आऊं ?'

'मिलने की जरूरत है ?'

'जीवन का पहला और अन्तिम प्यार है रंजन भाई ! अगर मेरी प्रेमिका आप ही से नहीं मिलेगी तो किससे मिलेगी ?'

'तो फिर मैं चलूं। मैं नरेन्द्र सिन्हा के घर कभी गया नहीं हूं।'

'तो फिर रहने दीजिए। मैं उसे अपने साथ ले आता हूं। आप मुझे यहीं उतार दीजिए।'

'नहीं मैं चलूंगा।'

रंजन ने कार रोक दी और कार लॉक करके सुशील के साथ चल दिया। सामने ही नरेन्द्र सिन्हा का मकान था। लेकिन सुशील उसे लेकर पिछवाड़े की ओर चल दिया।

'उधर शायद नौकर रहते हैं ?' रंजन ने पूछा।

'मैंने आपको बताया था न कि मधु की हैसियत नौकर जैसी ही है। वह सामने वाला क्वार्टर उसी का है। क्वार्टर में बिजली जल रही है। इसका मतलब है—मधु अपने क्वार्टर में ही है।'

दरवाजे के पास पहुंचकर सुशील ने धीरे से दस्तक दी।

'कौन ?'

'सुशील !'

मधु ने दरवाजा खोल दिया। सुशील दरवाजे की ओर बढ़ते हुए बोला—

'आइए !'

लेकिन रंजन मुड़कर टहलने लगा।

मधु बोली—'आइए न, रंजन भाई ! आप बाहर क्यों रुक गए ?'

रंजन आश्चर्य में डूबा-सा दिखाई दे रहा था। उसने दरवाजे के अन्दर कदम रखा तो उसके चेहरे की हल्की-सी मुस्कराहट और रहस्यपूर्ण बन गयी।

'आप शायद यह सोच रहे हैं कि मुझे आपका नाम कैसे मालूम हो गया ? एक तो मैं आपके बारे में रोजाना सुनती हूं, आज
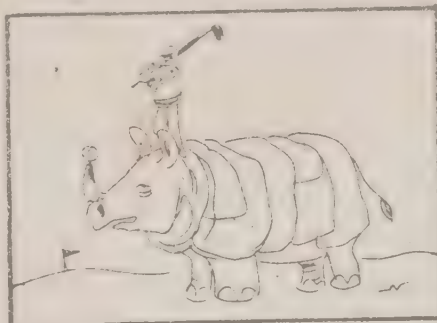
फंक्शन में मास्टर साहब के साथ बैठा देखकर मुझे विश्वास हो गया कि आप रंजन भाई हैं। वैसे आपको कालेज में कई बार देखा है। अपनी बहुत-सी सहेलियों से आपकी चर्चा भी सुनी है...।'

'एक ही साँस में बोलोगी या बीच में इन्टरवल भी होगा ?' सुशील ने कहा, 'रंजन भाई से तुमने बैठने के लिए भी नहीं कहा। अपनी ही हांक रही हो।'

'सोच रही हूं, कहां बैठाऊं पलंग टूटा हुआ है और कुर्सियां जख्मी हैं।' मधु मुस्कराकर बोली।

रंजन चुप था और बड़े निश्चित भाव से इधर-उधर देख रहा था। सुशील डरा कि कहीं रंजन बुरा न मान जाए। उसने धीरे से मधु को इशारा किया।

मधु जल्दी से बोली—

'बैठिए रंजन भाई।'

मधु !' रंजन नाटकीय ढंग से मुड़ा। 'आज तो हम जा रहे हैं, एक बात बताओ। क्या यह जरूरी है कि तुम इसी क्वार्टर में रहो ?'

'जी नहीं। लेकिन और जगह कहां है ?'

'कल से तुम यहां नहीं रहोगी। तुम्हारे लिए किराये पर एक मकान लिया जायेगा।'

'हमने माना रहें दिल्ली में, पर खायेंगे क्या ?' मधु बोली।

'यार सुशील !' रंजन हंसकर बोला, 'मेरे सिर पर तो कविताएं और मुहावरे थे। सोचा था तुम्हारी जान बची होगी। लेकिन यहां शेरों की बारिश हो रही है।'

सुशील हंसने लगा। मधु झेंप गयी।

'हम लोग विवाह करने वाले हैं। जिसे जो कुछ कहते हैं या समझते हैं वह अमिट और स्थाई होता है। सुशील तुम्हें मित्र कहता है। वह समय भी आयेगा कि जब यह मित्रता सामाजिक विधि-विधान से और भी मजबूत और स्थाई हो जायेगी। सुशील की मित्र होने के नाते आज से तुम्हें अपने बारे में सोचने का कोई अधिकार नहीं रह गया है। क्या समझीं ?' रंजन ने कहा और बड़े स्नेह से मधु के कंधे पर हाथ रखकर उसकी पीठ थपथपाई। फिर सुशील से बोला, 'चालिए मिस्टर ! बहुत रात हो गयी है।'

सुशील ने मधु की ओर बड़े गर्व से देखा जैसे कह रहा हो, 'देखा, यह है मेरा मित्र... इसे कहते हैं...मित्रता !'

रंजन सुशील का हाथ अपने हाथों में लेकर बाहर निकल आया।

जब कार चल पड़ी तो सुशील ने पूछा—

'मधु कहां रहेगी ?'

'कालेज से पश्चिम की ओर थोड़ी दूर पर ही कुछ नये क्वार्टर बने हैं।'

शेष पृष्ठ ३९ पर
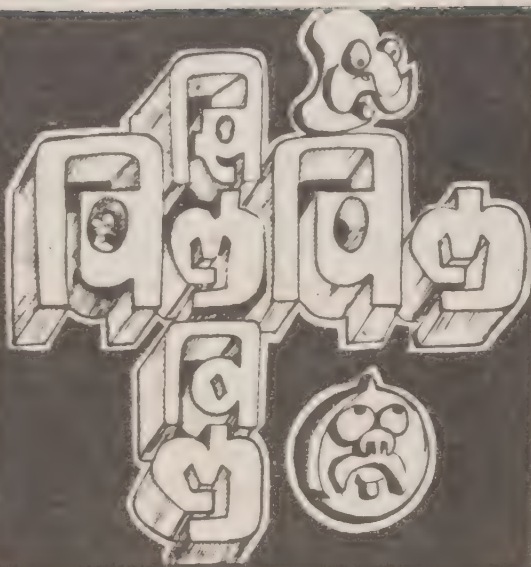
कौन है यह भाई टिक-टिकी बूम-बूम ? वह थमसे बहुत जरूरी काम से मिलना चाहता है । बड़ा हजीब नाम है ?
मैं भी पहले कभी नहीं मिला, पता नहीं कौन है ? शायद कोई आसामी होगा हमसे कोई केस हल करवाना चाहता होगा ।
उसके आने का टैम हो गया । लो घंटी बज गयी दरवाजे की ।
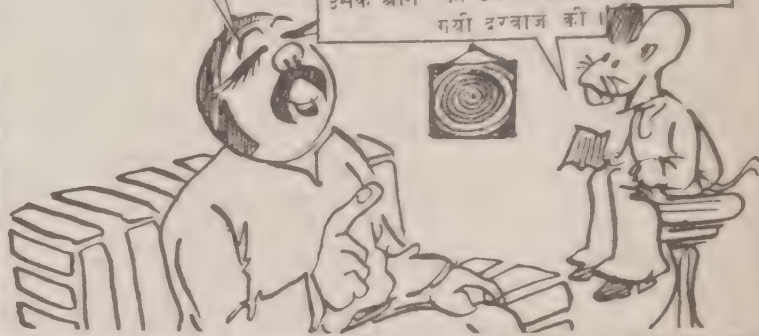
तो आप ही हैं एवन फर्स्टक्लास जासूस ? मेरा नाम टिकी-टिकी बूम-बूम है ।
यह नाम आपके माता-पिता द्वारा रखा गया है ?
यह नाम मैंने खुद चुना है जानते हो मैं कौन हूं ? तुमने अखबारों में बम्बई और नागपुर में बम फेंकने की वारदातों के बारे में पढ़ा होगा, मैंने ही वे बम फेंके थे । मैं खुद बम बनाने की कला में माहिर हूं । अब मैं तुमको सबक सिखाने आया हूं ।
चौथी जमात के सबक तो याद है इसको जी ।

तुम यह बम फेंक कर मार-काट क्यों मचाये हो ?
मैं इस दुनिया, समाज से बदला ले रहा हूं । मैं ठिगने कद का था, सब लोग मुझ पर हँसते थे । सर्कस में भी जोकर का काम किया, लोगों को हसाया, लेकिन एक दिन मेरे दिल में विद्रोह जागा । मेरी मजबूरी पर हसने वालों को जरा रुलाने का मजा लेना चाहा तब से मैं चिकी-चिकी बूम-बूम के नाम से आतंकवादी बन गया हूं ।
मैं तुम से भी नफरत करता हूं । उन सबसे नफरत करता हूं जो इस व्यवस्था और पुलिस की मदद करते हैं । तुम छोटे अपराधियों को पकड़वाते हो ? उन पूंजिपतियों के लिये काम करते हो जिन्होंने देश की करोड़ों गरीब जनता की मेहनत पर डाका डाल अपनी तिजोरियां भरी हैं । उनसे फीस लेकर भाड़े के टट्टू का काम करते हो ?
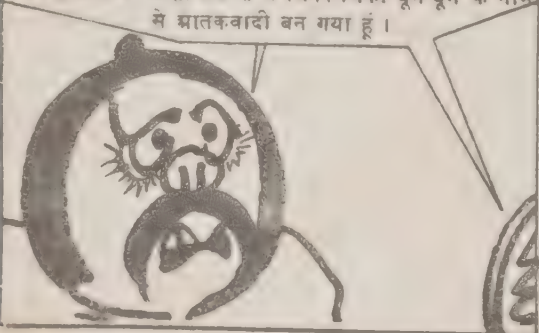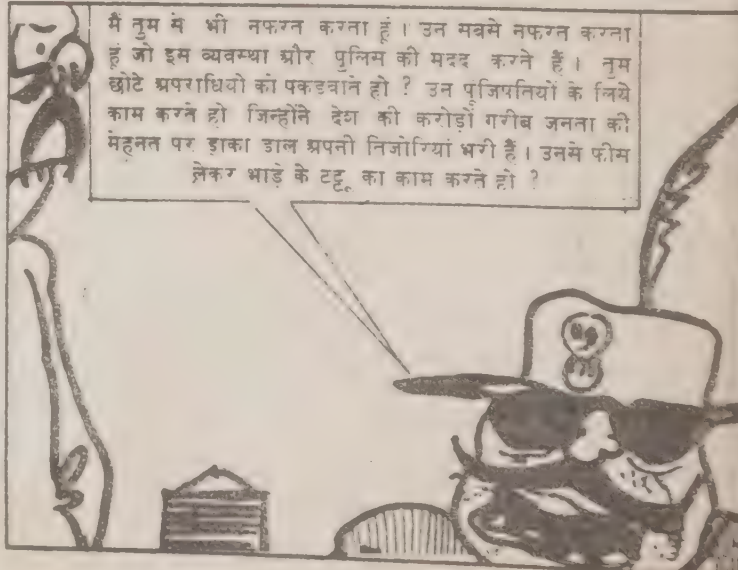
मैं तुम्हारे आफिस और तुम्हारे घर को बमों से उड़ा दूंगा ।
हिमाचल के आलू जितना बडा तेरा शरीर है हमें क्या उड़ायेगा । हमें भाड़े के टट्टू कहता है ? अभी लात मार कर तुझे बताता हूं ।

अब यह सीधे लाहौर के गद्दाफी स्टेडियम जाकर ही रुकेगा । ओवर टू गद्दाफी स्टेडियम ।
KICK
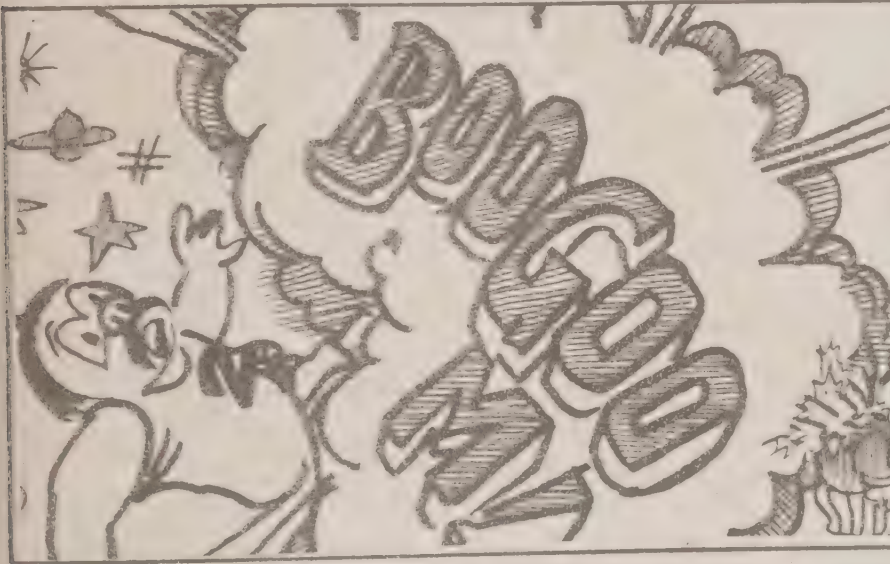
BOOOOOM
हा, हा, हा, हा ! लगा ? मेरी पीठ पर वह कूबड़ नहीं था मैंने एक बम बांध रखा था जो दबाव पड़ने पर फटता है ! इन कपड़ों के नीचे मैंने इस्पात की चद्दर से बना जैकट पहन रखा है ! मुझे पता था कि तुम गधे की नस्ल के जासूस हो लात मारने की जरूर कोशिश करोगे ।

यह हालत बना दी बॉस इसकी उस टिकी-टिकी बूम-बूम के बच्चे ने । अभी वह ज्यादा दूर नहीं जा पाया होगा । अगर आप जोर से दौड़ लगायें तो आसानी से उसको पकड़ सकते हो, पकड़ते ही उसकी गर्दन मरोड़ देना ।
यही तो तुम दोनों में कमजोरी है कि हर काम में जल्दबाजी करते हो इसीलिए हर जगह पिट जाते हो । दुश्मन को कभी छोटा नहीं समझना चाहिये ? हमेशा सोच विचार कर चाल चलनी चाहिये ।
यही तो सिबबिल में गलती हुई थी ।
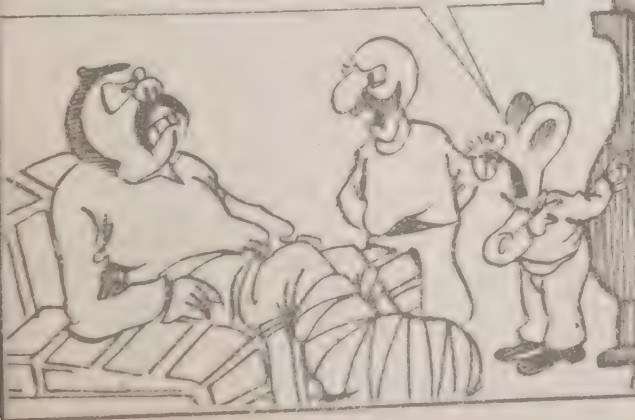
हमेशा याद रखो जो बगैर सोचे समझे कदम उठाते हैं वह जरूर दुश्मन के फंदे में······
फंस जाते हैं ! यह कहां फंसा दिया मेरा पैर ? हड्डी तोड़ के रख दी···अरे आंख के अंधो, चिकी-चिकी बूम-बूम घर में आकर बम चला गया और फर्श पर जानवर पकड़ने का लोहे का फंदा बिछा गया और थम को पता ही नहीं लगा ?
यह तो रीछ पकड़ने का फन्दा है ।
फंदा
सप्रेम भेंट चिकी, चिकी बूम-बूम ।
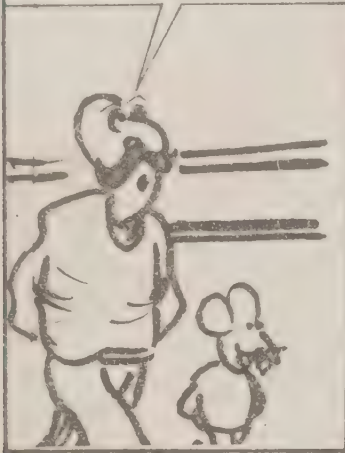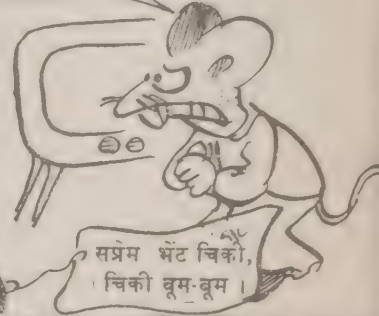
हमारा पाला बहुत चालाक आदमी से पड़ा है,हमें बहुत सोच समझ कर कदम उठाना होगा ।
बॉस कद तो उसका केवल साढ़े तीन फुट है । इतनी चालाकी कहां से आ गयी ?
कहावत है कि जितना छोटा उतना खोटा ।

हमारे दरवाजे के बाहर देहलीज पर यह क्या रखा है ? संतरों की टोकरी ! बॉस यह उसी चिकी-चिकी बूम-बूम की चालाकी है । ध्यान से सुनो टोकरी में से टिक-टिक की आवाज आ रही है ? इन सन्तरों में टायम बम छिपा है ।
मैं दौड़ कर सारे संतरे मैदान में फेंक कर आता हूं जो फटना होगा मैदान में फटेगा ।

हैं ? यह क्या सारे संतरे फेंक आया । लेकिन खाली टोकरी से ही टिक-टिक की आवाज आ रही है ।
टिक टिक
संतरे तो ठीक थे यह टोकरी ही टायम बम था ।
FOOM
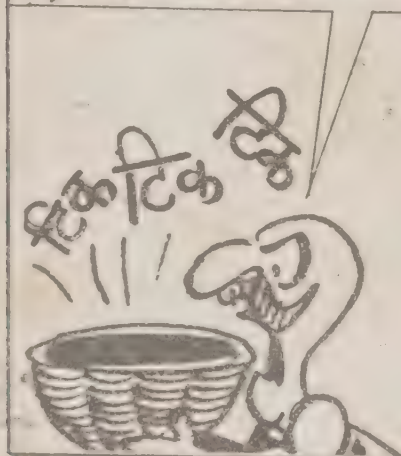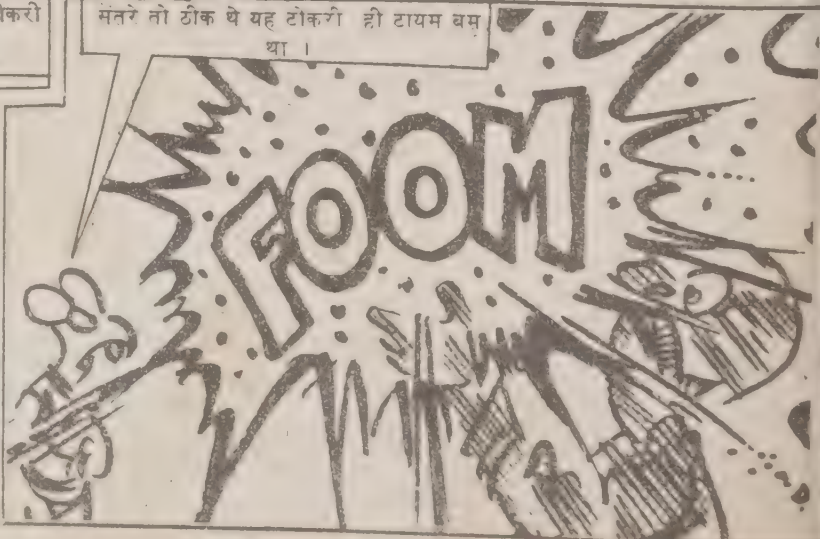
वह जिस दिन मुझे मिलेगा में इसी हाथ से उसका गला घोंट दूंगा ।
फिलहाल तो हमें आलू और हल्दी घोंट कर इस हाथ पर लगाना पड़ेगा । बारूद से जल गया है ।

भाई जी थम दोनों कहां गये थे ? गांव से एक ग्रादमी ग्राया था । चाचा रामजोत ने दो किलो देसी घी का कूंजा म्हारे लिये भेज रखा हैं । इब चिन्ता नहीं । एक-एक किलो देसी घी हरयाणे का जब म्हारे पेट में जायेगा तो रग लायेगा ! फिर बतायेंगे हम चिकी-चिकी बूम-बूम को ।
कहाँ रख्या कूंजा ।
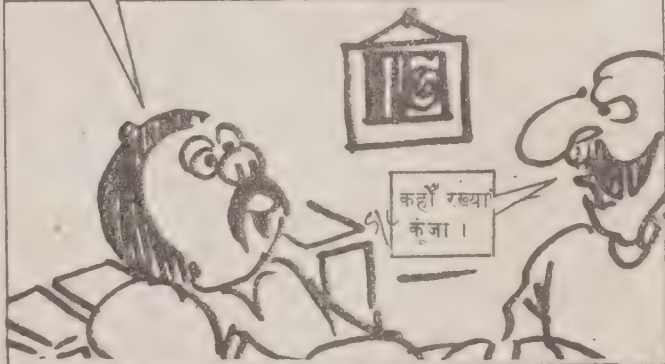
मेरा दिल कहता हैं कि देसी घी का कूंजा चाचा राम जोत ने नहीं भेजा, नही इसे देने वाला थारे गांव का ग्रादमी था ।

कैसे कहना हैं तू ?
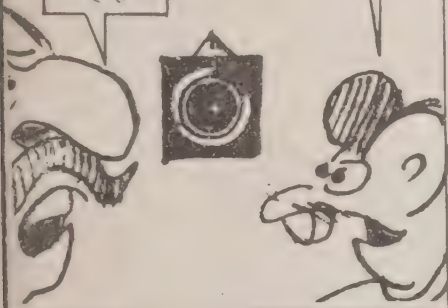
यह देखो जरा इस कूजे को गौर से देखो और कान ब्लैती रेती से तेज करके लगा कर सुनो । इस कूंजे में से भी टिक-टिक की ग्रावाज ग्रा रही है !
यह भी टायम बम है ?
जल्दी से इसे उठा कर यहां से बाहर फैंक दो वर्ना…

लेकिन उनके हटाने से पहले ही
पागल ग्रादमी से पाला पड़ा है थारा ।
POOOM
ग्रगले सप्ताह टिको, टिकी बूम, बूम और पिलपिल, मिलबिल का घनघोर युद्ध ।

आपके पत्र

अंक नं० ३८ अत्यन्त हास्यप्रद रहा। मोटू-पतलू, पिलपिल-सिलबिल अत्याधिक मनोरंजक थे। मुझे इस बात पर अत्यन्त गर्व है कि मेरी प्रिय पत्रिका दिनों दिन प्रगति कर रही है, सम्पादक जी, क्या मैं आपके द्वारा अंक नं० ३७ प्राप्त कर सकता हूं? यदि हाँ, तो किस प्रकार प्राप्त कर सकता हूं? दीवाना मेरे शहर में देर से आता है। कृपया जल्द भेजें, मेरी अनेकों बधाइयां सभी पात्रों को तथा चौधरी पिलपिल को जन्म-दिन की अनेकों शुभकामनायें।

अशोक—हजारी बाग

दीवाना का अंक प्राप्त करने के लिए 'सरकुलेशन मैनेजर' से पत्र-व्यवहार करें।

—सं०

मैं दीवाना का नियमित पाठक दीवाना का अंक २८ पढ़ने के बाद बन गया हू वास्तव में दीवाना मनोरंजन का एक अनूठा साधन है। हँसी एवं मजाक तथा अनेक प्रकार के हास्यव्यंग से युक्त दीवाना का प्रत्येक अंक बुकस्टालों की शोभा बढ़ाता है। आपसे अनुरोध है कि दीवाना में समाचार पन्ना भी प्रकाशित किया करें।

राजेन्द्र कुमार—चाड़वास

मैं दीवाना का एक नियमित पाठक हूं। बेहद साधना के बाद दीवाना अंक मिला। इस बार के अंक काफी लेट आ रहे हैं, आप उन्हें समय पर भेजा करें। मुखपृष्ठ काफी अच्छा था। हमें खुशी है कि आपने नया धारावाहिक उपन्यास शुरू कर दिया। फिल्म मुकद्दर के सिकन्दर की पैरोडी भी अच्छी रही। पिलपिल-सिलबिल, मोटू-पतलू, फैण्टम, पंचतंत्र. सभी कुछ अच्छा रहा। बाकी सारी सामग्री हास्यप्रद रही।

जुबायर अहमद—नई दिल्ली

आपका 'दीवाना' मुझे बहुत अच्छा लगता है। इसकी हर चीज बहुत मजेदार होती है और हँसा-हँसाकर हमारी सेहत भी बनाती है।

आपके दीवाना का हर नया अंक हमेशा नई ताजगी लेकर आता है।

सुरेन्द्रसिंह—अनीपुर

दीवाना का अंक ४० प्राप्त हुआ। मुख पृष्ठ ने दिल को काफी तसल्ली दी। चिल्ली-लीला काफी सराहनीय थी। चिल्ली के श्री चव्हाण जी को लिखे प्रेम-पत्र ने हमको काफी प्रभावित किया अन्य स्थाई स्तम्भ रोचक थे। बच्चे झमूरे का सुनहरी अमूल, मोटू-पतलू, पिलपिल-सिलबिल तथा दीवाना पंचतंत्र पसन्द आये। फिल्म पैरोडी-'मुकद्दर का चुकन्दर' ने काफी मनोरंजन किया। मेरा आपसे एक अनुरोध है और वह यह कि शीघ्र ही पाठकों द्वारा भेजे कार्टून्स का एक स्तम्भ शुरू करें।

अशोक लाल—हरिनगर

दीवाना अंक ४० प्राप्त हुआ। मुखपृष्ठ देखकर ही दीवाना की कीमत वसूल हो गई। चिल्ली का नया आविष्कार, सुबह का तारा, फैण्टम, पंचतंत्र, मोटू-पतलू काफी अच्छे रहे। पर पिलपिल-सिलबिल का तो कोई जवाब ही नहीं रहा। आपसे एक प्रार्थना है कि आप माकड़ जासूस व ००७ जेम्स बांड फिर से शुरू कर दें तथा खेल-खेल में का एक पेज और बढ़ा दें तथा 'सवाल यह है' बन्द कर दें। अन्त में फिल्मी स्टारों की जगह खिलाड़ियों की फोटो छापें फिर दीवाने को आठ चांद लग जायेंगे।

रामबीरसिंह—अलीगढ़

दीवाना अंक ४० मिला, अन्य अंकों की तरह बहुत ही रोचक लगा। चिल्ली को मुख पृष्ठ पर हाथी पर चढ़े कमेन्ट्री सुनते देख बहुत हँसी आई तथा इस बार के मोटू-पतलू, सिलबिल-पिलपिल, मदहोश, पंचतंत्र पढ़कर बहुत ही मजा आ गया। फिल्म पैरोडी मुकद्दर का चुकन्दर बहुत ही अच्छी लगी।

नरेन्द्रकुमार गाबा—हांसी

दीवाना का अंक ३९ प्राप्त हुआ। पढ़कर दीवाना हो गया। इस अंक में चिल्ली लीला, परोपकारी मोटू-पतलू, बच्चा झमूरा, एवं सिद्धार्थ फिल्म की पैरोडी पसन्द आई। बदलती चूड़ियाँ कहानी पसन्द आई।

मुकेश-राकेश बजाज—रायपुर

दीवाना पढ़ते-पढ़ते मैं हो गया दीवाना। लिखने लगा कहानी बनाने लगा गाना।
सचमुच दीवाना पत्रिका का भी जवाब नहीं, हर अंक मजेदार लगता है फिर भी—मेरा इक सुझाव है गर आपको मंजूर हो जाये तो मेरी तरह हर पाठक दीवाना जरूर हो जाये।

मेरा मतलब यह है कि 'आपस की बातें' स्तम्भ में जो पाठकों के प्रश्नों के उत्तर चचा बातूनी की कलम दवात से दिए जाते हैं वे उत्तर यदि किसी सुन्दर सी जवान अभिनेत्री की कलम दवात से दिये जायें तो चचा को कुछ आराम मिल जाए, वरना उनके सिर पर बाकी रहे दो चार बाल रफूचक्कर हो जायेंगे। जहां तक मेरा अनुमान है दीवाने पाठकों के दीवाने प्रश्नों की रगड़ को कोई अभिनेत्री ही सहती हुई अच्छी लगेगी।
दीवाना तेरा दीवाना तुझे याद करता है। जान कसम मेरे यार 'तरकर' तुझ पर मरता है।।
ले कोई अभिनेत्री तू साथ अपने जल्दी आजा; बजा फटाफट दे चाचा की छुट्टी का बाजा।।

प्रताप तरकर—मथुरा

दीवाना का ३० नवम्बर से ६ दिसम्बर तक का अंक देखा। नि संदेह पत्रिका में दिन प्रतिदिन निखार आता जा रहा है। आपकी सम्पादन कला निश्चय ही सराहनीय है। आशा है आपके कुशल सम्पादकत्व में पत्रिका इसी प्रकार निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर होती हुई हास्यव्यंग्य-साहित्य जगत में नए कीर्तिमान स्थापित करने में सफल होगी। मेरी समस्त शुभकामनाएँ सदैव आपके साथ हैं। उज्जवल भविष्य की कामना सहित।

कैलाशचन्द्र गोयल

पिछले दिनों घसीटा राम ग्रपनी कमर के दर्द का इलाज कराने डाक्टर झटका के पास गया तो वहां उसे कोई ऐसी दवा खिला दी गई जिस से उसकी कमर पर ग्रजीब सी फड़-फड़ाहट होने लगी। कमीज उतार कर देखा तो ग्रब घसीटा राम की कमर पर किसी बड़े पक्षी की तरह बड़े-बड़े पर उग ग्राये थे। इन परों को पा कर घसीटा राम बहुत खुश था। सड़क पर ग्रा कर उसने पक्षियों की तरह पर मार कर उड़ने की कोशिश की तो लोग यह ग्रजीब सा जानवर देख कर दंग रह गये। बहुत कोशिश करने पर भी जब घसीटा राम भली प्रकार नहीं उड़ सका तो उसके मित्र छछूंदर ने उसे ऊंचे पहाड़ की चोटी से नीचे खाई में गिरने ग्रौर वहां उड़ने की सलाह दी। पहाड़ की चोटी पर पहुंचे तो घसीटा राम के मित्र बोलने वाले उल्लू ने उसे बहुत समझाया कि इस चक्कर में वह ग्रपनी जान दे बैठेगा। पर घसीटा राम ने यह कह कर उल्लू की सलाह ठुकरा दी कि वह उसके सुनहरी पर देख कर जलने लगा है।

पहाड़ से कूदने पर घसीटा राम को पता चला कि उड़ने की बजाय वह किसी ग्लाईडर की तरह हवा में तैरने लगा है। ग्रौर ग्रपने इस ग्लाईडर का कंट्रोल उसके ग्रपने हाथ में नहीं है, बल्कि हवा के झौंके उसे जिधर चाहे उड़ा कर ले जाते हैं। ग्राकाश में उसे तरह-तरह की मुसीबतों का सामना करना पड़ा, जिन में ग्राखरी मुसीबत यह थी कि ग्राकाश में उड़ने वाले ग्रन्य पक्षियों को इस उड़ने वाले ग्रादमी की घुसपैठ पर बड़ा गुस्सा ग्राया। उन्होंने इसे ग्रपने ग्रधिकारों पर छापा माना ग्रौर एक हमले में घसीटा राम को बोटियां नोच-नोच कर खा गये।

जल्दी से जल्दी यहां से नीचे उतरो घसीटा भाई। नहीं तो यह गिद्ध नोच-नोच कर तुम्हारी धज्जियां उड़ा देंगे।
नीचे उतरना क्या मेरे बस में है। मैं पर किसी और तरफ जाने के लिये मार रहा हूं
और हवा का झौंका मुझे किसी और तरफ ले जा रहा है।
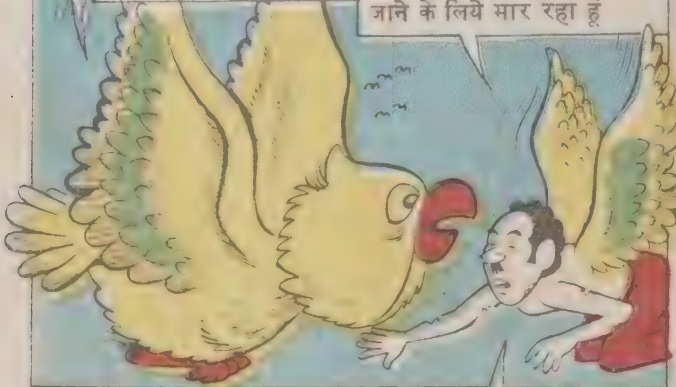
बहुत कोशिश करके घसीटा राम अब आसमान से कुछ नीचे आ गया था।
रररररररररर...

वह देखो उड़ने वाला आदमी। लगता है किसी दूसरे उपग्रह से आया है।

उड़ते-उड़ते घसीटा राम अब एक ऊंची बिल्डिंग की चोटी के पास पहुंच गया था।
रस्सी का फंदा डाल कर मुझे पकड़ लो भाई।
फांसी का फंदा डाल कर पकड़लेंगे कबूतर!

पुलिस से कहो इसे गोली से उड़ा दे।
एक को गोली से उड़ाने से क्या होगा। दूसरे उपग्रह से इसके साथ ऐसे ही हजारों आदमी आए होंगे।

अब घसीटा राम पर मारता हुआ सड़क पर बहुत नीचे आ गया था और चारों ओर अफरा-तफरी फैल गई थी ।

फ्लाईंग स्कवैड को सूचना दो ।

इसे एंटी एयरक्राफ्ट गन से मार गिराओ ।

चाहे जूते मार कर गिराओ, पर किसी प्रकार गिराओ तो सही मुझे ।

दीवाना

ग्ररे बचियो इस उड़न तश्तरी से ।

ग्ररे मार दिया इस करले की दुम ने ।

इस मेजाईल के
सामने से हटो ।

मैं बाल-बाल बच गया ।
क्या कह रहे हो,
बाल ही तो नहीं बचे ।

ग्ररे बचना इस उल्लू से ।
मेरा नाम मुफ्त में
ही डुबो रहा है ।

हे भगवान मैं कहां हूं ?
मेरे टिमाटरों की चटनी
बनी है
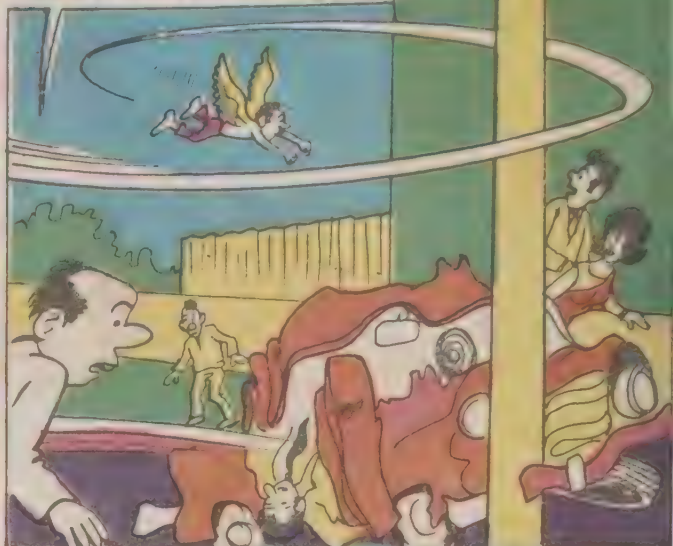
पूरी सड़क पर हंगामां करने के बाद अब

घसीटा राम एक बिल्डिग की खिड़की तोड़ता हुआ उसके अन्दर घुस गया । अब तक उसे पकड़ने के लिए वहां पुलिस पहुंच चुकी थी ।

उस बिल्डिग में घुसा है ।
अन्दर जाकर पकड़ लो कम्बख्त को ।

पुलिस बिल्डिग के अन्दर पहुंची तो वहां माजरा ही कुछ और था । वहाँ एक ऐसा खुफिया प्रेस लगा हुआ था, जहाँ जाली नोट छापने का धंधा होता था ।
पकड़ लो सबको, इस ठिकाने का पता लगाने की तो हम बहुत दिनों से ताक में थे ।

मैंने पकड़वाये हैं यह जाली नोट छापने वाले । मुझे कम से कम दो चार लाख रुपये का इनाम तो दो ।
तुम्हारी अकलमंदी से नहीं, यह अपराधी इत्तेफाक से पकड़े गये हैं । इनाम देने की बजाए तुम्हें तो हम सड़क पर हंगामा मचाने और शान्ति भंग करने के अपराध में पकड़ेंगे ।

इतने बड़े कारनामे के बाद अब भी मुझे पकड़ेंगे । पर मैं तुम्हारे हाथ क्यों आने लगा ? मेरे पाँव टूट गये हैं क्या जो मैं भाग नहीं सकता ।

एक सांड उसे देख कर बिफर गया ।
अरे मैंने क्या तेरी भैंस खोली है सांड भाई जो इतना ताव खाकर पीछे पड़ा है
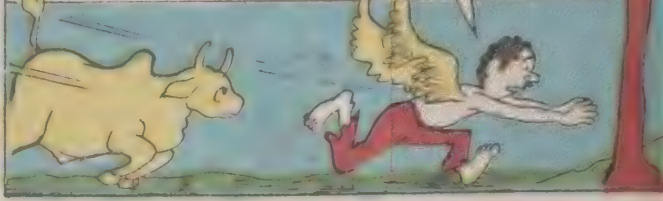
सांड ने पूरी ताकत से हमला किया, पर घसीटा राम उछल कर बच गया ।
सब मेरी जान के दुश्मन बने हैं । पक्षी मेरी बोटियाँ नोचते हैं । आदमी मुझे पकड़कर जेल भेजना चाहते हैं और जानवर मुझे मारने के लिए अपने सींग पैना रहे हैं । अरे कोई मुझे जीने भी देगा या नहीं ?
मैंने कहा था । खुश किस बात पर हो रहे हो । तुम तो न पक्षियों में हो न जानवरों में और न आदमियों में ।

हाँ, मेरी हालत चिमगादड़ से भी बदतर है । मैं तो धोबी का कुत्ता हूं । न घर का न घाट का ।
अरे इस घसीटा राम को क्या हुआ ?

लगता है कोई भयानक सपना देख रहा था ।
कमर का दर्द ठीक करने के लिए मैंने इसे नींद की गोली दी थी । यह नींद में ही बड़बड़ा रहा है ।

अरे नीचे उतर ना, मेरे ऊपर क्यों चढ़ा है ?
नहीं । मैं पेड़ से नीचे नहीं उतरूँगा । पहले इस सांड को

इन कलाकारों का एक और जोरदार नया कारनामा आगामी अंक में।

सवाल यह है ?

क्या इनका भी कोई जवाब है ?

छोटी-छोटी प्राचीन कथाओं में बड़ी-बड़ी बातें छुपी होती हैं।

एक भेड़िये और भेड़ के बच्चे की छोटी-सी कहानी में बड़ी सी मन मानी देखिये।

बढ़-बढ़ कर बातें बना रहा है । तूने पिछले साल भी मेरी बेइज्जती की थी ।

आप तो मुझसे बहुत बड़े हैं । जब की बात आप कर रहे हैं तब तो मैं कुछ भी नहीं था ।
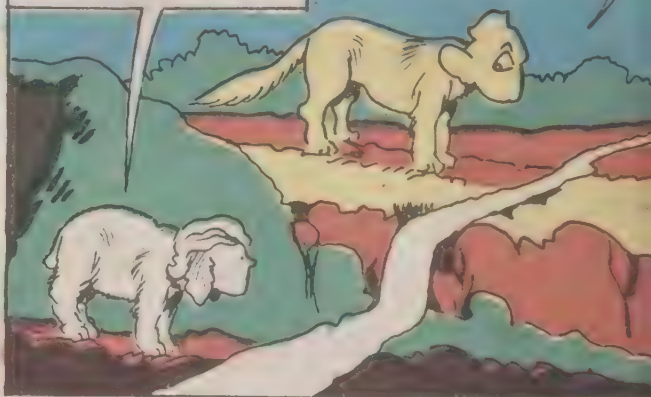
तू नहीं था । तो तेरे पुर्खों ने मेरी बेइज्जती की होगी ।

वे तो आप की बहुत इज्जत करते थे । उन्होंने तो कभी आपकी बेइज्जती नहीं की ।

अगले सप्ताह एक और लाजवाब सवाल इसी पृष्ठ पर
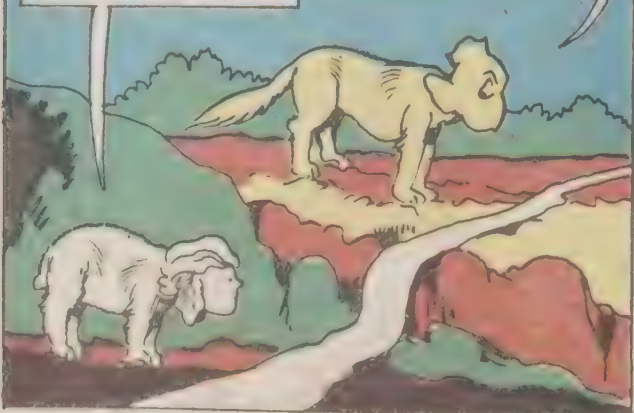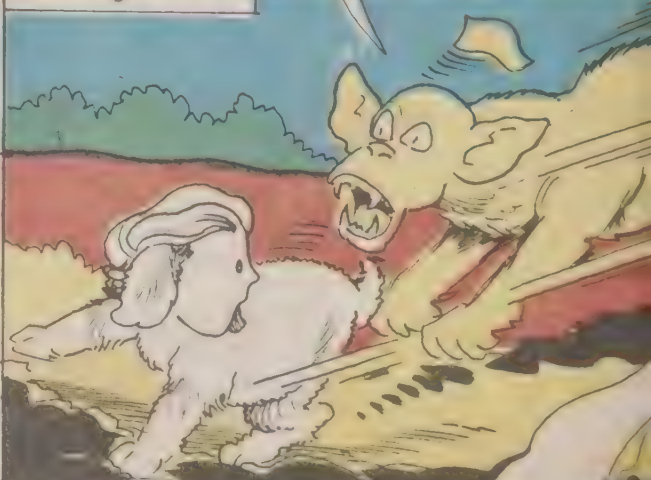
भारत पाक क्रिकेट सीरीज

कुछ जलते प्रश्न

भारत पाक सीरीज काफी रोचक रही लेकिन बीच में कुछ ऐसी बातें देखने में आई कि दिल में सवाल उठता है क्या भारत पाक के बीच होने वाले क्रिकेट सीरीज सचमुच ही खेलों का मुकाबला होता है या और कुछ भी ? इन सीरीजों में बदले की भावना तथा राजनीति और साम्प्रदायिकता का कितना पुट रहता है। भारत की युवा पीढ़ी ने दोनों देशों के बीच पाकिस्तान में होने वाली यह पहली क्रिकेट सीरीज देखी है (पहली उस समय हुयी थी जब आज की युवा पीढ़ी पैदा ही नहीं हुयी थी या बच्चे थे)। इस सीरीज की कुछ बातों पर गौर कीजिये—

● लाहौर में टैस्ट जीतने पर टी. वी. इन्टरव्यू में पाक टीम के कप्तान मुश्ताक मुहम्मद ने कहा कि उनकी जीत दुनिया के तमाम मुसलमानों की दुआओं का फल है ! गोया यह क्रिकेट टैस्ट मैच नहीं था मुस्लिम और हिन्दू सम्प्रदायों के बीच धर्म युद्ध था ? क्या भारतीय टीम भारत के दस करोड़ (पाकिस्तान से ज्यादा) मुस्लिमों का प्रतिनिधित्व नहीं कर रही थी। क्या भारतीय विकेट कीपर सैयद किरमानी विकेट के पीछे विकेट कीपिंग करते हुये पाकिस्तानी टीम की जीत के लिये दुआएं मांग रहे थे ? कितना बड़ा मजाक है ! पाकिस्तानियों के दिल में साम्प्रदायिकता का जहर इतना फैल चुका है ?

● लाहौर टैस्ट की भारत की दूसरी इनिंग्ज में अम्पायर ने जिस प्रकार चेतन चौहान और सुनील गावस्कर को आउट करार दिया उसे देख यह नहीं कहा जा सकता कि पाक टीम में १३ व्यक्ति थे ११ खिलाड़ी और दो अम्पायर ?

● लाहौर टैस्ट जीतने के बाद पाक सरकार ने पाकिस्तान में एक दिन का सरकारी छुट्टी का ऐलान कर दिया ! एक टैस्ट मैच जीतने पर एक दिन की छुट्टी ?

● साहीवाल में एक दिन के क्रिकेट मैच में जब भारत जीत की ओर बढ़ रहा था तो मुश्ताक ने सरफराज से वाइड तथा ऊंची उठती बॉलें फिकवा कर भारतीयों को रन न बनाने दिया जब कि एक दिन के मैच में ऐसी गेंदों का फेंकना नियम विरुद्ध था। विरोध में भारतीय बैट्स मैन वाक आऊट कर गये ! क्या जीतने के लिये गलत सही सारे हथकंडे अपनाना ही खेलों का उद्देश्य रह गया है ?

● कराची में पांचवे दिन के निर्णायक दौर में खिलाड़ियों में कहा सुनी हो गयी !
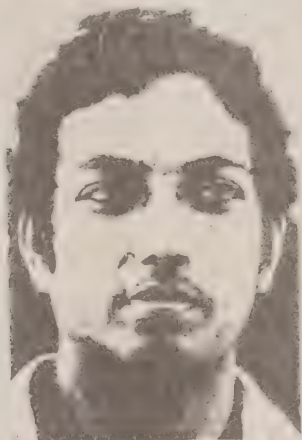
महेन्द्र अमरनाथ तथा जावेद मियांदाद में झड़प हुयी !

● जब पाकिस्तान जीत की ओर बढ़ रहा था तो स्टेडियम में नारे गूंज रहे थे 'अल्लाहो अकबर' और 'काश्मीर हम लेके रहेंगे' गोया यह टैस्ट मैच नहीं भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध हो रहा हो ! टैस्ट मैच जीतने से पाकिस्तान को काश्मीर कैसे मिल जायेगा ? और क्रिकेट टैस्ट मैच का काश्मीर समस्या से क्या सम्बन्ध है ? टैस्ट मैच जीतने पर ऐसा व्यवहार जैसे युद्ध जीत लिया हो ! कहीं ऐसा तो नहीं कि पाकिस्तानी लड़ाइयों में हुई अपनी हार व बंगला देश के निर्माण का भारत से बदला टैस्ट मैच जीत कर लेने का अहसास कर अपने अहं की झूठी तुष्टि कर रहे हों !

● इस क्रिकेट सीरीज में खेल भावना का जनाजा नहीं निकला ?

● हमें आशा है कि १९८० में सीरीज भारत में होगी तो दर्शक इस प्रकार का खेदजनक साम्प्रदायिक भावना का प्रदर्शन नहीं करेंगे ! हमें याद है कि कुछ वर्ष पूर्व कलकत्ता में खेले जा रहे टैस्ट मैच में खेल के चौथे दिन भारत की हार निश्चित थी ! इनिंग्ज पराजय होने वाली थी ! भारत की केवल दो विकटें बची थीं जिनके पांचवे दिन पन्द्रह मिनट में गिर कर खेल खत्म होने की सम्भावना थी ! परन्तु पांचवे दिन सत्तर हजार दर्शक खेल देखने पहुंचे ! भारत को हारता हुआ देखने ! खेल भावना की ऐसी बेजोड़ मिसाल विश्व में कहीं और देखने को नहीं मिल सकती !

● भारत पाक सीरीज के खेल भावना पर कफन तो तब पड़ गया जब सीरीज के अन्त में भारत पाक मैत्री क्लब में समारोह हुआ ! कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे ! क्लब के पाक प्रेजीडेंट भाषण दे रहे थे कि अब भारत पाक में मैत्री और प्रेम भावना और बढ़ेगी। उनकी बगल में स्टेज पर ही बैठे भारतीय बॉलर चन्द्रशेखर जोर-जोर से उनकी बात पर खिला-खिला कर निरन्तर हंसते जा रहे थे जैसे यह मजाक हो !
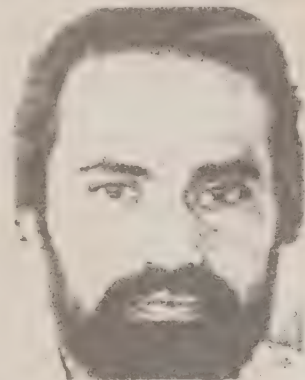
खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

हाकी कैसे खेलें

★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★

यदि कोई फुल बैंक खेलते हुए अपने स्थान से आगे बढ़ जाता है, तो सेंटर हाफ को तुरन्त उसका स्थान लेना आवश्यक होता है। साथ ही उसे अपने स्थान का ध्यान भी रखना पड़ता है। वह अपने दोनों ओर के लैफ्ट और राईट हाफ की भी सहायता करता है, आक्रमण करते समय उसे अपने सेंटर फारवर्ड के साथ भी रहना आवश्यक होता है और विपक्षी रक्षा-पंक्ति तोड़कर, उसके स्ट्राईकिंग सर्किल में प्रवेश करने में उसे पूर्ण सहयोग देना उसका कर्तव्य होता है। सेंटर हाफ को थ्रू पास, स्क्वेयर पास, स्कूप और हिट करके गेंद बराबर पास द्वारा आगे बढ़ाने में सहायक होना जरूरी होता है। जब विपक्षी आक्रमण करते हुए आगे बढ़ता है। तो सेंटर हाफ उसके क्रास हिटों को बराबर बेकार करने का प्रयत्न करता रहता है।

आक्रमण पर दबाव जारी रखने के लिए सेंटर-हाफ खिलाड़ी का कर्तव्य होता है कि वह अपनी फारवर्ड-पंक्ति को पास आदि देता हुआ भर पूर सहयोग दे।

खेल को प्रभावशाली और अपनी जीत के अनुकूल बनाने के लिए तीनों हाफ में जो गुण आवश्यक हैं, वे इस प्रकार हैं—(१) गेंद को रोकने की क्षमता, (२) पुश और स्कूप करने का अभ्यास, (३) उचित और सही पास देने की निपुणता, (४) बिना ड्रिबिल किये हिट लगाना और (५) तीव्र गति से दौड़ते रहने की समार्थ्य।

राइट-आउट या आउट साइड राइट

आउट साइड-राइट खिलाड़ी सामान्य रूप से पक्ष-रेखा के निकट ही खड़ा होता है। उसकी अपनी स्थिति का उद्देश्य यह होता है कि वह प्रतिपक्षी हाफ-खिलाड़ियों को अपनी बाईं ओर रखता है और उसका आगे बढ़ने का मार्ग लगभग साफ होता है। पक्ष-रेखा के निकट रहकर वह प्रतिपक्ष हाफ-खिलाड़ी को इन साइड-राइट से दूर करके उसके दौड़ने के लिए अधिक दूरी बनाकर उसकी परेशानियों को अधिकाधिक बढ़ाता रहता है।

यद्यपि आउट साइड-राइट खिलाड़ी का क्षेत्र कुछ सीमित होता है, फिर भी उसे अपनी चालें बदलते रहना आवश्यक है; क्योंकि एक ही उपाय बार-बार आजमाने से प्रतिपक्षी खिलाड़ियों को उसके खेल का सीधा अन्दाज हो जाएगा, जिससे प्रतिपक्ष लाभ उठाने से नहीं चूकेगा। यदि आउट साइड राइट खिलाड़ी को गोल रेखा या कार्नर-ध्वज तक भागना पड़ जाता है, तो उसे या तो 'डी' के किनारे पर या गोलकीपर के बहुत निकट गोल के मुहाने पर केन्द्रित रहना आवश्यक है। यदि वह अनुभव करता है कि प्रतिपक्ष की रक्षा-पंक्ति को नहीं भेदा जा सकता, तो उसे गेंद वापस अपने राइट हाफ को 'पास' कर देनी चाहिए।

राइट आउट अपनी क्रास हिटों और थ्रू पास का यदि उचित ढंग से उपयोग करे, तो विपक्षी रक्षा-पंक्ति को सुगमता से भंग कर सकता है। समान्य रूप से जब किसी गोल की ओर दबाव पड़ता है, तो उसके रक्षक बैंक यह प्रयत्न करते हैं कि वे गेंद को अपने राइट आउट तक पहुंचा दें। राइट आउट पुनः उसे अपने फारवर्डों की सहायता से आक्रमण-कारी टीम के क्षेत्र में बढ़ा सकता है। राइट आउट को बजाय स्वयं गेंद लेकर आगे बढ़ने के क्रास या थ्रू पास द्वारा अपने साथी अग्रिम पंक्ति के खिलाड़ियों को सहयोग देना आवश्यक है। उसे गैलरी में ही रहकर खेलना पड़ता है, किन्तु आवश्यकतानुसार उसे कई बार राइट इन का स्थान भी लेना पड़ता है।

राइट आउट वह खिलाड़ी है, जो दाईं ओर से पैनल्टी कार्नर या कार्नर हिटें लेता है। बाईं ओर से कार्नर हिट लेते समय वह 'डी' से कुछ ही दूरी पर होता है। अतएव यदि दूसरे फारवर्ड खिलाड़ी गेंद चूक जाते हैं तो वह गेंद को रोककर वापस आ सकता है। आउट साइड राइट खिलाड़ी को अपने प्रति सतर्क रहना आवश्यक है, ताकि वह आफ साइड नियम का दोषी न बन जाए।

इन साइड-राइट

इन साइड राइट खिलाड़ी, विपक्षी लैफ्ट हाफ के लिए परेशानी में डाले रखने वाला होता है। उसकी तेज गति को रोक पाना सरल नहीं होता; क्योंकि उसे अपने दाईं ओर खेलने का लाभ मिलता है। उसे अपने राइट आउट और राइट हाफ से मिल कर त्रिकोणात्मक संघर्ष करना उचित होता है। इस प्रकार वह विपक्ष की मोर्चा बन्दी को सुगमता से भेद कर अन्य फारवर्डों की सहायता कर सकता है। उसे विपक्ष के लैफ्ट इन पर पूरा नियंत्रण रखना आवश्यक होता है। इन साइड-राइट, अन्य खिलाड़ियों की अपेक्षा विपक्ष से सुगमता से गेंद बचा सकता है। वह गेंद को दाईं ओर रखकर खेलता है जिससे विपक्षी लैफ्ट हाफ या लैफ्ट इन आदि खिलाड़ी उससे गेंद आसानी से नहीं छीन सकते।

इन साइड राइट को यह ध्यान रखना आवश्यक है कि आमतौर पर आउट साइड राइट पांचों फारवर्ड खिलाड़ियों में सबसे तेज खिलाड़ी होता है। अतएव यदि वह एक क्षण के लिए प्रतिपक्ष द्वारा अनदेखा रहता है तो उससे लाभ पहुंचाना, उससे लाभ उठाना इन साइड खिलाड़ी का कर्तव्य होना है। यदि इन साइड राइट घेरे तक पहुंच गया हो तो वह गेंद अपने फारवर्ड खिलाड़ी को 'पास' कर दे। यदि परिस्थितियां अनुकूल हों तो कभी-कभी हाफ तथा बैंक खिलाड़ियों के बीच से आउट साइड खिलाड़ी को 'डायगनल पास' देना बहुत लाभकारी होता है और रक्षा-व्यवस्था को मात देने के लिए विंग खिलाड़ी की गति पर निर्भर रहते हुए या तो गेंद को 'डी' में दुबारा 'पास' करे या गोल दाग दे।

यदि स्थितिवश आउट साइड खिलाड़ी परे चला गया हो तो इन साइड राइट को उससे 'पास' लेने के लिए तैयार रहना आवश्यक है और यदि वह 'डी' तक पहुंचकर गोल दागने की स्थिति में हो तो उसे अवसर से लाभ उठाना चाहिए, परन्तु सेंटर या इन साइड लैफ्ट को 'पास' देकर वह उससे भी अधिक अपनी टीम का हित कर सकता है; क्योंकि ये दोनों गोल दागने की अनुकूल स्थिति में होते हैं। अपनी फारवर्ड पंक्ति को मजबूत बनाने में, इन साइड राइट खिलाड़ी का योगदान महत्वपूर्ण रहता।
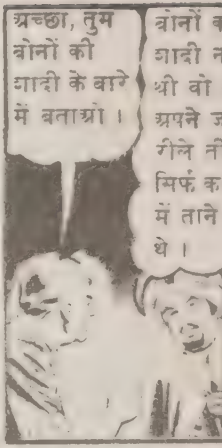
(क्रमशः)

फैण्टम और
तीन हत्यारे
क्या बात है जोई ?
मैं तुम्हें यह बताना भूल गया कि लुटेरे मेरी मोटर बोट भी ले गये हैं और उसमें इतना पैंट्रोल नहीं है कि शहर तक पहुंच सकें ।

धन्यवाद जोई···अच्छा किया जो तुमने मुझे रोक कर यह बात बताई नहीं तो मैं भी भूल गया था कि तुम्हें दोबारा से धन्धा करने के लिये कुछ चाहिये होगा
!
जोई यह क्या है ?

उसने तुम्हें क्या दिया है जोई ?
यह—असली हीरा है । दोबारा से धन्धा शुरू करने के लिये दिया गया है !
गुडलक !

अब हम नया घर बनायेंगे एक बड़ा स्टोर···आधुनिक वस्तुयें और एक मोटर बोट···।

इतना कुछ सिर्फ एक छोटी चीज के बदले ? जोई तुम्हारा नशा अभी तक नहीं उतरा ?
मैं बिल्कुल होश में हूँ यह सचमुच का हीरा है !

लुटेरे कुछ देर पहले ही यहां से गये थे लेकिन जोई के कहने के मुताबिक वे लुटेरे ज्यादा दूर तक नहीं जा सकते···

जरा वो पैंट्रोल का कनस्तर पकड़ाना···मोटर में पैंट्रोल खत्म हो गया लगता है ।
हूँ ? इसमें तो सिर्फ पानी है !
SPUTTER-SPUTTER-

अब क्या करें शहर तो कई मील दूर है और यह जंगल जंगली जानवरों से भरा हुआ है ।
पर पर पर
अरे ! उधर देखो !

कर्नल वीकस, जंगल पेट्रोल का रिटायर कर्नल
बहुत खुशी हुई तुम्हें यहां देखकर राजकुमार तोराना आपको पहाड़ी क्षेत्र छोड़कर इधर कैसे आना पड़ गया ?
कर्नल वीकस, एक बहुत ही शानदार शादी पर घने जंगलों में बुलाया गया था ।

घने जंगलों में ? जहां बौने रहते हैं ?
बिल्कुल ठीक अन्दाजा लगाया··· मैं तुम्हें वहां के बारे में बताऊंगा
लेकिन पहले यह बताओ रिटायर होने के बाद क्या जिन्दगी पहले की तरह मजे में गुजर रही है ?
मुझे वो दिन बहुत याद आते हैं···
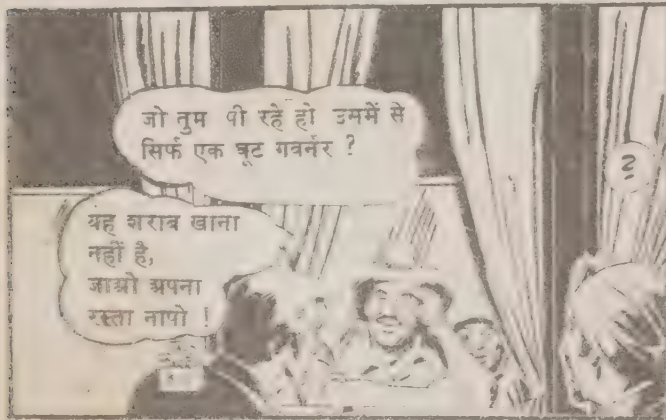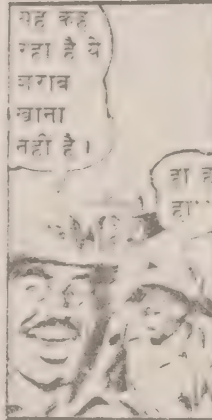
गुमनाम है कोई प्रतियोगिता

आपको यह बताना है कि यह किस [illegible] कलाकार की तस्वीर है और कौन क्या दीवानी बात कह रहा है?

यदि एक से ज्यादा अच्छे हल हुये तो इनाम की राशि विजेताओं में बराबर-बराबर बांट दी जायेगी, अपने हल केवल पोस्टकार्ड पर ही इस पते पर भेजें :- गुमनाम है कोई प्रतियोगिता, ट ब, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-2 । पहुंचने की अन्तिम तिथि -१३ जनवरी ७६ एक पोस्टकार्ड पर एक हल भेजें।

प्र० : क्या संसार के महाद्वीप कभी एक या जुड़े हुए थे ?

बालमुकन्द अग्रवाल—लखनऊ

उ० : संसार के नक्शे में दक्षिणी अमरीका तथा अफ्रीका के महाद्वीपों के देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि अमरीका ब्रेजील के पास दायीं ओर को झुका हुआ है उधर अफ्रीका बायीं ओर को झुका हुआ है। तथा ऐसा ही लगता है कि यदि पहेली के समान इन दोनों महाद्वीपों को जोड़ा जाये तो इन्हें एक-दूसरे में फिट करके एक ही महाद्वीप बनाया जा सकता है।

कोई पचास वर्ष पूर्व एक जर्मन वैज्ञानिक श्री ऐलर्फड वैगनर ने इस बात की खोज की थी तथा उनका मत था कि जो दक्षिणी ऐटलांटिक महासागर तथा ब्रेजील और अफरीका के विपरीत समुद्रीय तटों का निरीक्षण करता है वह इस बात को अवश्य अनुभव करता है कि वे बहुत मिलते-जुलते हैं। ब्रेजील के समुद्रीय तट के बाहर निकले हिस्से का आकार तथा अफ्रीका के तट के अन्तुरण काट बहुत मिलते हैं।

श्री वैगनर ने ये भी बताया कि प्रकृति का अध्ययन करने वालों के अनुसार भी दक्षिणी अमरीका तथा अफ्रीका के वनस्पति और जीव जन्तु जीवन में भी बहुत अधिक समानता है। इससे निश्चित रूप से इस बात की पुष्टि होती है कि एक समय ये दोनों महाद्वीप एक-दूसरे से जुड़े थे तथा धीरे-धीरे किन्हीं अज्ञान कारणों से अलग हो गये।

श्री वैगनर ने महाद्वीपों के अलग होने नामक एक सिद्धान्त भी बनाया। उनके अनुसार संसार के सब भू-समूह एक दूसरे से जुड़े हुए एक बहुत बड़ा महाद्वीप थे। इस महाद्वीप में नदियाँ, झीलें तथा समुद्र तक भीतरी भागों में हो थे। फिर ये भू-समूह किन्हीं अज्ञात कारणों से बिखर कर अलग-अलग हो गये। दक्षिणी अमरीका, अफ्रीका से टूट कर अलग हुआ तथा उत्तरी अमरीका दक्षिणी यूरोप से अलग हुआ और यूरोप पश्चिम की ओर बह गया। तथा इसी प्रकार दूसरे महाद्वीप भी एक दूसरे से अलग हुए।

क्या इसका विश्वास वैगनर के सिद्धांत के अनुसार ही किया जा सकता है ? परन्तु नक्शे से इस सिद्धांत को कुछ आधार मिलता है तथा इतिहास के पहले के वनस्पति तथा जीव जन्तु जीवन से भी इसके मुमकिन होने का अनुमान लगाया जा सकता है। पृथ्वी का भू-पटल आज भी बह रहा है, सो हो सकता है कि श्री वैगनर का मत सही हो।
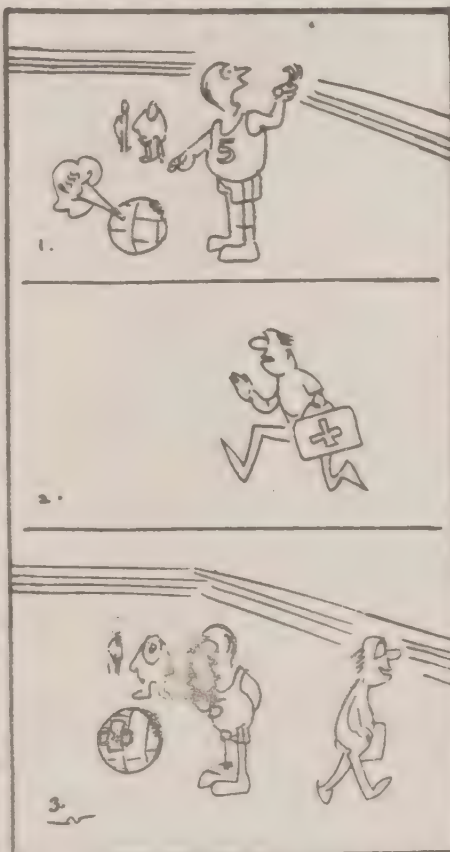
प्र० : गणतन्त्र की शुरुआत कैसे हुई थी ?

सरबजोत सिंह कलसी—पंजाब

उ० : वास्तव में गणतन्त्र का अर्थ है, जनता का राज। परन्तु आधुनिक युग में गणतन्त्र का अर्थ है, वो राज्य जो जनता की सलाह से कार्य करता हो।

राजनैतिक गणतन्त्र प्रायः दो प्रकार का होता है। पहली प्रकार के गणतन्त्र में सब नागरिक मिल कर राज्यकीय पदों के लिये लोगों का चुनाव करने की नीति बनाते हैं। ये लोग राज्य का संचालन करते हैं। इसे सीधा गणतन्त्र कहते हैं। दूसरे प्रकार के गणतन्त्र में जनता अपने इच्छित काम करवाने के लिये अपने प्रतिनिधी चुनती है, ये चुने हुए प्रतिनिधी ही हर प्रकार की नीतियाँ बनाते हैं। इसे प्रतिनिधी गणतन्त्र कहा जाता है। देश की पूरी बड़ी जन संख्या में सारा राज्यकीय कार्य जनता द्वारा करना कठिन है, इसलिये लगभग सारे संसार में प्रतिनिधी गणतन्त्र ही प्रचलित हैं।

आने जाने, मिलने जुलने, स्वतन्त्र पत्रकार धार्मिक स्वतन्त्रता तथा कानूनी बराबरी जैसे मानवीय अधिकारों की रक्षा करने वाले देशों को ही गणतन्त्र कहा जा सकता है।

राजनैतिक गणतन्त्र का आरम्भ इतिहास के आरम्भ से ही शुरू हो गया था। इस काल में यूनान के एथन्स नामक राज्य में सीधा गणतन्त्र था, क्योंकि वहाँ पर राज्य करने वालों की संख्या बहुत ही कम थी। अधिकतर लोग वहाँ पर गुलाम तथा विदेशी थे, जिन्हें वोट देने तथा सरकारी पदों पर कार्य करने की अनुमति नहीं थी। इसलिये एथन्स के उस सीधे प्रकार के गणतन्त्र में आज के दिन हम बहुत सी त्रुटियां निकाल सकते हैं।

आधुनिक गणतन्त्र ने मध्ययुग से बहुत कुछ पाया। उदाहरण के लिये इस युग का एक प्रचलित सिद्धान्त था। 'समझौता सिद्धांत'। इस सिद्धांत के अनुसार शासकों तथा प्रजा में एक प्रकार का समझौता होता था, जिस के अनुसार दोनों को अपने कर्तव्य निभाने पड़ते थे तथा कर्तव्य पूरे न करने पर जनता को शासकों को दिये गये अधिकार छीनने का पूरा हक होता था।

आधुनिक प्रतिनिधित्व भी फ्यूडल युग में शासकों की आवश्यकता के कारण आरम्भ हुआ था। फ्यूडल राजा, प्रजा के प्रतिनिधियों की सभा बुला कर ही भत्तों की मांग पर सहमति लेते थे। वो समझते थे कि यदि प्रजा के प्रतिनिधी नये भत्तों की अनुमति दे देंगे, तो इसके धन एकत्रित करने के लिये जनता नये कर सरलता से स्वीकार कर लेगी। परन्तु इस प्रकार प्रतिनिधी सभा की अनुमति से कार्य करने से ही प्रतिनिधित्व का विचार पनपा और प्रतिनिधी सरकार की शुरुआत हुई।

क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

१९७९ का वर्ष

फिल्म स्टारों के लिये

(पौंगा पंडित की भविष्य वाणी)

जीनत अमान

कमर पर चर्बी की तह १/१० सेंटीमीटर मोटी हो जायेगी। राज कपूर से सामना होने पर दोनों आंखें नहीं मिलायेंगे। पी० ए० बीस डिब्बियाँ सिगरेट की और ८ बोतल स्कॉच की पार कर जायेगा।

आई. एस. जौहर

जौहर को एक और अंग्रेजी फिल्म में रोल मिलेगा। उसकी शेखी मारते-मारते जौहर के गले में टौन्सिलाइट्स हो जायेगा और कांट्रेक्ट तथा डॉलर की रकम का चैक सबको दिखाते-दिखाते हाथों में मोच आ जायेगी। नई गर्लफ्रैण्ड शादी से पहले ही तलाक दे जायेगी।

हेमा मालिनी

धर्मेन्द्र के एक दिन में २७ के औसत से टेलीफोन आयेंगे। काल के ऊपर के पांच बाल सफेद हो जायेंगे। इडली खाते समय साम्भर में मिर्चें अधिक होने के कारण पांच बार आंसू आयेंगे। दो बार तो नाक भी बहने लगेगी। मां से पौने दो बार झगड़ा होगा। पुरानी साड़ियां चोर ले जायेंगे।

राखी

इस वर्ष चार और फिल्में हिट होंगी। इसी खुशी में कमर का घेरा १५ इंच और बढ़ जायेगा। गुलजार का कोई खत नहीं आयेगा। लड़की की देख-भाल के लिये चार बार आया बदलनी पड़ेगी! चिकन बिरयानी में नामक ज्यादा पड़ जायेगा।

शशिकपूर

बीबी शशि के लापता होने की रिपोर्ट पुलिस में लिखायेगी। शशि रोज रात को एक बजे आयेगा और शूटिंग के लिये सुबह साढ़े तीन उठकर चल देगा, इस कारण बीबी को उसके आने का पता नहीं होगा। इस घटना से मियां बीबी में मनमुटाव बढ़ेगा।

टीना मुनीम

कांट्रेक्ट साइन करते समय सात बार कांट्रेक्टों पर पैन स्याही लीक कर देगा। आटोग्राफ देते समय कमर को चमका लगेगा। और इलाज के लिये जनेवा जाना पड़ेगा। फरवरी के बाद देवानन्द के टेलीफोन आने बन्द हो जायेंगे! प्रशंसकों के पत्रों में लैटर बम आने का भी जोग है।

सचिन

सारिका से १८ बार कुट्टी होगी और १७ बार सुलह हो जायेगा। ब्लेड से गालों पर कट लगने का भी जोग है। पिछले वर्ष सिलाया सूट दो जगह से चूहे खा जायेंगे। पैसों के लेन-देन पर दो प्रोड्यूसरों से झगड़ा होगा।

बिंदिया गोस्वामी

रोमांस की अफवाहें उड़ेंगी। खुद सैक्रेटरी से कहकर वहॅ ऐसी अफवाहें उड़वायेंगी—एक बार आराम करने अमरीका जायेगी वहां चार बार रेहड़ी वाले से हम्बरगर खाते हुये मुंह के कोनों मे टोमेटो केचप बाहर निकलेगा।
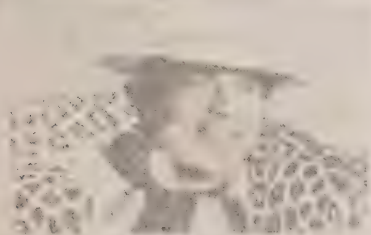
धर्मेन्द्र

पिछले साल पत्रकार से लड़ाई हुयी थी इस साल कबाड़ी वाले से लड़ाई होगी। बात सुप्रीम कोर्ट तक पहुंचेगी। अन्त में कबाड़ी वाले से माफी मांगनी पड़ेगी। जगाधारी से ७५ और रिश्तेदार आकर बम्बई में धर्मेन्द्र के घर में फेवीकोल से जमकर बैठ जायेंगे।

शबाना आजमी

शखर कपूर का साथ बना रहेगा। मन जलेबी खाने को करेगा लेकिन अपने स्टेट्स को ध्यान में रख इच्छा दबा दी जायेगी। नजले के कारण नाक का ट्रैफिक प्रायः बना रहेगा।

अमिताभ बच्चन

क्रोधी युवा का रोल करते जाने के कारण माथे पर लकीरें पड़ जायेंगी। ज्यादा शूटिंग के कारण टांगें और भी पतली हो जायेंगी। जया भादुड़ी नामक भूतपूर्व अभिनेत्री से साल में दो-तीन बार मुलाकात होगी।

नीतू सिंह

पिचहत्तर बार गलत टेलीफोन नम्बर मिलेगा। बाबा (ऋषिकपूर) का नम्बर मांगेगी और एक्सचेंज वाले बाबा पोटरीज वालों का नम्बर देंगे। सपने में १३ बार शादी होगी। मम्मी से तीन बार जुकाम लगेगा। दो बार सैंडिल की एड़ी उतर जायेगी।

विद्या सिन्हा

मां के रोल मिलने लगेंगे। चेहरे पर झुर्रियां मेकअप के नीचे दबने से साफ-साफ शब्दों में इन्कार कर देंगी। वजन आठ किलो बढ़ जायेगा। उसी अनुपात से रोल कम हो जायेंगे।

रेखा

खंडाला जाते हुये २१ बार कार का पहिया पंक्चर हो जायेगा। जया भादुड़ी १३ बार खा जाने वाली नजरों से देखेगी। १५ पत्रकारों को इन्टरव्यू देने से इन्कार कर देंगी। कबाब और तन्दूरी मुर्गा ज्याद खाने के कारण तीन बार हाजमा खराब हो जायेगा।

जरीना वहाब

शूटिंग के समय चश्मे का फ्रेम टूट जायेगा। घर में कई बार आटा गीला हो जायेगा और बगैर फूली चपातियां खानी पड़ेंगी।

अमोल पालेकर

जनता पार्टी वाले ११ बार चन्दा मांगने आयेंगे। और तीन फिल्में हिट हो जायेंगी। बीड़ी की राख झड़ने से कई पेंटों और शर्टों में छेद हो जायेंगे।

मुकाबला

—प्रहलाद नारायण रायजादा

सवेरे का समय था। ठण्डी हवा चल रही थी। चिड़िया चहचहा रही थी। चारों ओर चहल-पहल थी। ग्वाला मवेशियों को मैदान में इकट्ठा कर रहा था। इधर-उधर से पशु खेर में सम्मलित होने ग्रा रहे थे। पूर्व दिशा से एक हृष्टपुष्ट गाय ग्राई, पश्चिम से भारी भरकम भैंस! दोनों ही साठ को पार कर चुकी थी, पर नेता थी। खेर के नेतृत्व की ग्रभिलाषा हृदय में घर कर चुकी थी। दोनों ने एक साथ मैदान में प्रवेश किया। रामा-रामा का ग्रौपचारिक ग्रादान प्रदान हुग्रा—

गाय—जय महादेव जी की!

भैंस—जय शनिदेव की!

बिसमिल्ला ही गलत! मिलकर बैठी भी नहीं थी कि विरोध स्पष्ट हो गया! सीनियर होने के नाते गाय ने समझाया, 'बहिन जी! शिवजी की जय बोलो, शिवजी की!' भैंस में हीनता की भावना जाग्रत हो गई। गाय के व्यवहार में ग्रभिमान महसूस कर उत्तेजित हो उत्तर दिया, 'शिवजी की नहीं, शनिदेव की जय बोलो।' गाय ने ग्रप्रसन्न होकर प्रश्न किया, 'शनिदेव की क्यों?' भैंस ने प्रश्न का उत्तर प्रश्न करके ही दिया, 'महादेव की क्यों?' गाय ने उत्तर दिया, 'क्योंकि महादेव ग्रौर पार्वती मेरे बेटे की सवारी करते हैं!' भैंस ने उसी प्रकार गौरव ग्रौर ग्रपनत्व दर्शाते हुए उत्तर दिया, 'मेरा बेटा शनिदेव की सवारी है!'

गाय ने पैंतरा बदल कर तर्क किया, 'शिवजी दयालु हैं। शिव को महादेव माना गया है।' भैंस ने मुंह चिढ़ाते हुए कहा, 'शिवजी तो भोले भंडारी हैं! शनि महाराज चमत्कारी देवता हैं!' चमत्कार को सब नमस्कार करते हैं! शिवजी को भोले भंडारी बनाकर भैंस ने जो व्यंग्य बाण छोड़ा था, गाय से सहन नहीं हो सका। उसने बिगड़ कर प्रश्न किया, 'तो तू मेरी बात नहीं मानेगी?' भैंस ने खम ठोककर उत्तर दिया, 'नहीं ऽऽ!' साथ ही मुस्कुराते हुए चुटकी ली, 'बहिन जी! ग्रापको ही मेरी बात माननी पड़ेगी!'

बहस में गर्मी ग्रा गई! मैदान में खड़ी गाय ग्रौर भैंस ग्रपने-ग्रपने नेता के नेतृत्व में ग्रामने सामने खड़ी होकर बारी-बारी से नारे लगाने लगीं। उनके नारों की ध्वनि से ग्राकाश गूंज उठा! तमाशबीन स्त्री पुरुष चारों ग्रोर खड़े होकर देखने लगे। बच्चे ताली बजा बजाकर दोनों दलों को उकसाने लगे। पब्लिसिटी वाले ग्रपने टूटे हुए कनस्तर पीट-पीट कर दोनों का उत्साह बढ़ा रह थे। नेता जोश में होश खो बैठे। वाक युद्ध में ग्रत्यधिक तेजी ग्रा गई।

गाय—काली कलूटी, बैंगन लूटी, जैसी कुरूप तू है, वैसा ही तेरा बेटा भैंसा ग्रौर वैसे ही तेरे शनिदेव हैं!

भैंस—तुम तो सुन्दरता की खान हो न?

—हाँ ऽऽ! मैं सुन्दर! मेरा बेटा सुन्दर! ग्रौर महादेव ग्रौर पार्वती सुन्दर!!

—हम काले हैं तो क्या हुग्रा दिल वाले हैं! हमारा सबका रंग एक है! पक्का काला रंग, जिस पर दूसरा रंग चढ़ नहीं सकता! गाय का कोई रंग भी है? कोई धौली, कोई मटमैली, कोई चितकबरी, तो कोई काली। तेरा बेटा रंग रूप में सुन्दर है
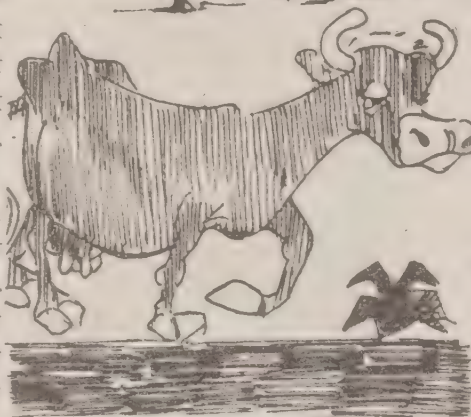
तो क्या, है तो निपट मूर्ख! तभी तो मनुष्य निपट मूर्ख ग्रादमी को 'बछिया का ताऊ' बताता है।

—भैंसा तो बड़ा बुद्धिमान है न? तभी तो मनुष्य भैंसों को शराब पिलाकर लड़ाता है। वह बुद्धिमान लड़ लड़कर लहू-लुहान हो जाते हैं। मेरा बेटा राजा महाराजाग्रों के रथों में जोता जाता है। भैंसा कूड़ा-करकट ग्रौर मैले की गाड़ी खींचता है।

दर्शक गाय के तर्क की प्रशंसा कर रहे थे। बच्चे बार-बार ताली बजाकर दाद दे रहे थे। भैंस की खिसियाहट ग्रधिकाधिक बढ़ रही थी। गाय ने बहस जारी रखते हुए कहा, 'हिन्दू मुझे 'गौ माता' कहते हैं। तुझे 'भैंस माता' कोई नहीं कहता।

भैंस—ग्रौर जब तुम मंडियों ग्रौर बाजारों में सब्जी ग्रादि में मुंह डालती फिरती हो, तो मनुष्य तुम्हारी लट्ठों से पूजा करता है। मूल्य तो मनुष्य मेरा ही ग्रधिक लगाता है। मैं ग्रधिक उपयोगी पशु जो हूं। हाथ कंगन को ग्रारसी, ग्रौर प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या? दूध तो मेरा ही ग्रधिक गाढ़ा होता है।

—तेरा दूध गाढ़ा ग्रधिक हुग्रा तो क्या? उपयोगी तो मेरा ही ग्रधिक होता है। बच्चों ग्रौर रोगियों को डाक्टर मेरा ही दूध बताते हैं। घोड़े वाले बछेरों को मेरा ही दूध पिलाते हैं। तेरा दूध पिला दें तो घोड़े भी भैंसों की तरह मंद बुद्धि ग्रौर मट्ठर हो जायें।

भैंस कुपित होकर बोली, 'बस रहने दे। तुझे बुद्धि का बड़ा ग्रभिमान है। मेरी एक ही टक्कर में हड्डी पसली टूट जायेंगी।' गाय को भी ताव ग्रा गया। उसने भैंस की चुनौती स्वीकार करते हुए कहा, 'तुझे बल का बड़ा घमंड है। ले ग्रा जा! यह पैने सींग तेरे पेट में घुसेड़ दूंगी। सारी ग्रातें बाहर निकल ग्रायेंगी।' दोनों ग्रामने-सामने जमीन में खुर जमाकर डट गई। दोनों की गर्दन तन गई। नथने फूल गये। ग्रांखे लाल हो गई।

दोनों ही दल के उपनेता ग्रपने नेताग्रों को 'समवेता युयुत्सवः' देखकर डर गये। वह नेताग्रों को समझा-बुझा कर शान्त करने में जुट गये, पर भरसक प्रयत्न करने पर भी ग्रसफल रहे। दोनों नेता भिड़ जाने के लिए डटी हुई थीं। गाय जिद्दी थी। वह ग्रपनी जिद पर ग्रड़ी हुई थी। भैंस का सहयोगी एक विलक्षण सहायक नेता था जो मनुष्य से संघर्ष कर एक ग्रभूतपूर्व विजय प्राप्त कर चुका था। वह भैंसों के एक जोरदार रेले की व्यवस्था कर रहा था।

भैंसों के रेले का प्रहार होने ही वाला था। उसी क्षण ग्वाला दूर से दौड़कर ग्राया ग्रौर दोनों नेताग्रों के बीच दीवार बनकर
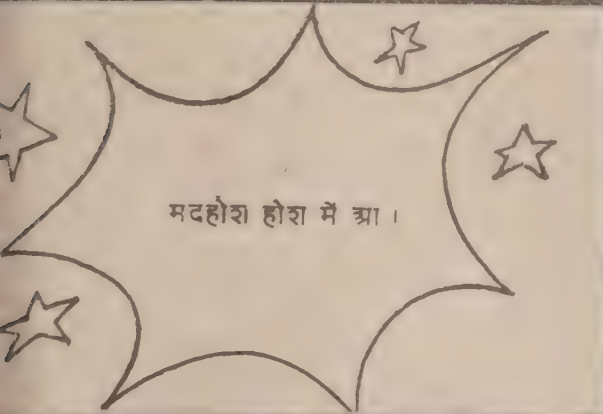
ड़ा हो गया। उसने दोनों को समझाया. म दोनों ही मूर्ख हो। दोनों पशुदल की ते हुए भी लड़ने पर तुली हुई हो। तुम झती क्यों नहीं कि युद्ध में दोनों पक्षों की नि होती है। तुम आपस में लड़ोगी तो सरा फायदा उठा जायेगा।

गाय और भैंस दोनों ने चकित होकर ा, 'तीसरा कौन?'

ग्वाला—पशुदल का परम शत्रु, मनुष्य, स्वार्थवश कुछ भी कर सकता है। मानव ज्ञानिक यन्त्रों का प्रयोग कर तुम दोनों ही महत्व घटा दिया है। वह ट्रैक्टर से ी करता है।

गाय-भैंस (एक साथ) ग्वाला भाई! ीं बताओ, ट्रैक्टर हमारी बराबरी कर ता है? क्या ट्रैक्टर दूध देगा? ट्रैक्टर र करेगा?

—मनुष्य डिब्बे का दूध और वनस्पति ा उपयोग करता है। उसने कैमिकल तैयार कर ली है। अब तुम्हीं सोचो. तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार करेगा?

गाय और भैंस दोनों सहम गईं। वह न लगीं, हम आपस में लड़कर पशुदल र्बल बना देंगी। अवसरवादी मनुष्य स्वर्ण अवसर नहीं चूकेगा। तब हम दोनों का ही क्या होगा? दोनों एक साथ बोलीं, 'ग्वाला भाई! हम नहीं लड़ेंगी, पर तुम हमारे झगड़े का निपटारा कर दो। तुम निर्णय कर दो कि गाय बड़ी या भैंस?'

ग्वाला—मूंग मौठ में कौन बड़ा और कौन छोटा? दल के अन्दर सब बराबर हैं। तुम दोनों ही अपना अहंकार छोड़कर मेल कर लो। लड़-लड़कर अपने ही पैरों में कुल्हाड़ा न मारो। वृक्ष की जिस डाल पर बैठी हो उसी को न काटो।

—अच्छा, यह फैसला तो कर दो कि हम शिवजी की जय बोलें या शनिदेव की?

—सोमवार को शिवजी की और शनिवार को शनिदेव की?

—और सप्ताह के बाकी पांच दिन क्या तुम्हारी जय बोलेंगी?

—मेरी नहीं! उस नारायण की बोलो जिसने पशुदल को जन्म दिया है। जिसके पास जय है, और अज्ञान रूपी अन्धकार को दूर हटाने के लिए प्रकाश भी है।

इस प्रकार समझा बुझाकर ग्वाला खेर को घेर कर जंगल में चराने, निम्नलिखित नारे लगवाता हुआ ले गया—

पशुदल की—जय हो।
गाय-भैंस—बहिनें-बहिनें।
पशुधन—सर्वोत्तम धन है।
जनसंख्या—घटाओ!
पशुसंख्या—बढ़ाओ।

गृहयुद्ध टल गया, पर गाय और भैंस में मेल न हो पाया। भैंस नेता मौन है। पर उसके सहयोगी नेता के दिल में भैंसों के रेले का प्रदर्शन कर 'जिसकी लाठी उसकी भैंस', कहावत चरितार्थ करने की तीव्र इच्छा शेष है। गाय नेता अपनी जिद पर अड़ी हुई है। वह सोचती है, 'पशुदल का नेतृत्व मैं कर रही हूँ। शक्ति का प्रदर्शन कर कोई भी मुझ से सत्ता नहीं छीन सकता।'

जोगियों की लड़ाई में खप्पर फूटते हैं। पशुदल के उपनेताओं को चिन्ता है कि गाय और भैंसों के दलीय झगड़े में उनके दल की खैर नहीं। यही सोचकर नेता भिड़ जाने से रुके हुए हैं। पशुदल को बने जुम्मां-जुम्मां आठ दिन हुए हैं। आपसी लड़ाई छिड़ गई तो कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा इकट्ठा करके भानुमती ने जो कुनबा जोड़ा है, उसका विघटन हो जायेगा। पशुदल के शेर फिर चूहे बनकर रह जायेंगे। ●

दीवाना-कैमल

रंग प्रतियोगिता

निःशुल्क प्रवेश
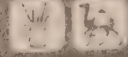
पुरस्कार जीतिए :

कैमल–पहला इनाम ३० रु.
कैमल–दूसरा इनाम २० रु.
कैमल–तीसरा इनाम १० रु.
कैमल–आश्वासन इनाम ५
दीवाना-आश्वासन इनाम ५
कैमल–सर्टिफिकेट १०

केवल १२ वर्ष तक के विद्यार्थी प्रतियोगितामें शामील हो सकते हैं। उपर दिये गये चित्रमें अपने मनचाहे कैमल रंग भर दिजिए। अपने रंगीन प्रवेश-पत्र नीचे दिये गए पत्ते पर भेजिए, दीवाना, ८-बी, बहादूर शहा जाफर मार्ग, नयी दिल्ली ११० ००२
परिणाम का निर्णय अन्तिम निर्णय होगा। और कोई भी पत्रव्यवहार, नहीं किया जाएगा।

नाम .... उम्र ....

पता ....

कृपया ध्यान रखिए कि पूरा चित्र पेंट किया जाये।
चित्र भेजने की अंतिम तारीखः २८-१-७९

CONTEST NO.6

VISION

सुपर ७७७

मैल की शामत, सफ़ेदी की ताक़त

मनोरंजक बाल साहित्य

पुस्तक	विवरण	मूल्य रु०पै०
आखिरी शेर	ले० : रस्किन बांड (कुमाऊं की पहाड़ियों के एक शेर की रोमांचकारी कहानी)	2-00
बेताल कथाएं	रूपान्तरकार : वीरेश्वर भट्टाचार्य (17 शिक्षाप्रद व रोचक बेताल कहानियों का संग्रह)	3-00
भैंसों का राजकुमार	ले० : मोहन चौधरी (पूर्वी भारत की 12 लोक कथाओं का संग्रह)	2-25
लो गुब्बारे	ले० : जयप्रकाश भारती (11 रोचक कहानियां का संग्रह)	4-00
रामगंगा का शेर	ले०: चन्द्रदत्त 'इन्दु' (जंगल की पृष्ठभूमि पर रोमांचकारी बाल उपन्यास)	3-50
चिड़ियों का दरबार	(19 रोचक कथाओं का संग्रह)	3-00
एक दिन का मेहमान	ले० : का०गो० जोगलेकर (मराठा बहादुरों की 14 रोचक कहानियां)	3-00
हवा की बेटी	ले०: चन्द्रदत्त 'इन्दु' (12 रोचक कहानियों का संग्रह)	2.50
हीरों के व्यापारी	ले० : इन्द्रदेव (रहस्य रोमांच भरी कहानी)	1-50
कादम्बरी	ले० : अशोकजी (संस्कृत के महाकवि बाणभट्ट की प्रसिद्ध कथा सरल भाषा में)	2-00
कमल और केतकी	(13 रोचक कहानियों का संग्रह)	1-50
कोक्कास का उड़न खटोला	ले०: शान्तिदेवी मोतीचंद्र (पांचवीं शताब्दी के प्रसिद्ध कथाकार वसुदेव हिंडी की 5 कहानियां-सरल भाषा में)	2-00
मनोरंजक कहानियां	(12 रोचक कहानियों का संग्रह)	3-00
पिन्कू के कारनामे	(इटली के प्रसिद्ध बाल कथाकार कार्लो कलोदी का एक बाल उपन्यास)	4-00
पुजारी जी का ब्याह	(28 हास्य प्रधान कहानियां)	4-00
संगठन में बल	(पशु पक्षियों के माध्यम से 22 मनोरंजक कहानियां)	3-50
हीरे की लौंग	(18 रोचक कहानियां का संग्रह)	1-40
बाल भारती	(बाल मासिक पत्रिका) एक प्रति : 0.80 रु०, वार्षिक चंदा 9.00 रु०, दो वर्ष का : 15.00 रु०, 3 वर्ष का 21.00 रु०	

अपने निकटतम पुस्तक/समाचारपत्र विक्रेता से खरीदें या हमें आदेश भेजें :–
(हमारी पत्रिकाओं के ग्राहकों को 5 रु० या अधिक की पुस्तकें एक साथ खरीदने पर 20% की छूट मिलेगी—डाक खर्च मुफ्त)

व्यापार व्यवस्थापक
प्रकाशन विभाग
भारत सरकार, सूचना और प्रसारण मंत्रालय,
पटियाला हाऊस, नई दिल्ली-110001

डी ए वी पी 78/355

ठ १३ का शेष

हां ! सरकारी क्वार्टर हैं । किराया
कम है । लोगों ने पहले ही अपने नाम
लॉट करा लिये हैं और अब पगड़ी पर दे
हैं ।'

'मालूम है !' रंजन बोला, 'पगड़ी दे
जायेगी ।'

'लेकिन पगड़ी तो बहुत ज्यादा है ।
र आप पर…।'

'गधेपन की बात मत करो,' रंजन ने
ाजगी से कहा, 'जिन्दगी में पहली बार
र करने चले हो । टका जेब में न हो तो
र टें बोल जाता है । सिन्हा साहब अच्छे
मी नहीं हैं । मधु को वहां से हटाना ही
ा ।'

'नये क्वार्टरों से नूरपुर पास है ?'

'हां, मधु के मां-बाप भी उसके पास ही
। अपनी खेतीबाड़ी भी देखते रहेंगे ।
ल, मेरी नजर बहुत दूर तक देखती है ।'

दूसरे दिन शाम तक रंजन ने उन
टरों में से एक क्वार्टर पगड़ी देकर ले
। दो हजार रुपये देने पड़े । ये क्वार्टर
दी से अलग-थलग थे । अभी तक छः-सात
र ही आबाद हुए थे । सुशील उसी
मधु को लाना चाहता था लेकिन रंजन

क दिया । दूसरे दिन कुछ मेज-कुर्सियां,
खाने के बर्तन, चाय का सैट, अनाज,
ीने का और रोजाना के उपयोग का
सामान रंजन ने खरीद कर क्वार्टर में
दिया । दोनों ने मिलकर मकान को
ा और फिर वहीं सो गये ।

ोने से पहले रंजन ने सुशील से कहा—
सुशील ! मुझे सोने देना और तुम
उठकर मधु के पास चले जाना । उसे
लेकर उसके गांव चले जाना । वहां से उसके मां-बाप को साथ लेकर यहां आ जाना । तुम्हें आते-आते शाम हो जायेगी । मैं यहीं पर तुम्हें मिलूंगा ।'

सुशील की आंख नौ बजे खुली । हाथ-मुंह धोकर चाय बना कर पीने के बाद वह कालेज चला गया ।

तीन दिन से मधु से भेंट नहीं हो सकी थी । समय भी कम था । लेकिन उसने मधु से कालेज में ही मिलने का निश्चय किया था ।

उसने लड़कियों के कामन-रूम में जाकर मधु को इशारे से बाहर बुला लिया । मधु मुस्कराती हुई बाहर निकल आयी ।

'आप तो तीन दिन से दिखायी ही नहीं दिये । उस दिन क्या मुझसे कोई गलती हो गयी थी ?'

'नहीं, कोई गलती नहीं हुई थी ।' सुशील जल्दी में बोला—'तुम अपने गांव चली जाओ और अपने माता-पिता को ले आओ । रंजन भाई ने मकान ले लिया है ।'

'कहां ?'

'यहीं जो नये क्वार्टर बने हैं ।' सुशील ने उंगली से इशारा किया ।

'अरे ! उसकी तो पगड़ी देनी पड़ी होगी ।'

'सारी बहस आज ही कर लेना । बताओ, कब जाओगी ?'

'मैं अकेली कैसे जाऊं ?'

सुशील बौखलाया हुआ था क्योंकि बहुत-सी लड़कियां इशारे करके उसकी ओर देखकर हंस रही थी ।

'रिक्शा ले आइए, अभी चलती हूं ।'

सुशील के साथ चलने के आश्वासन पर मधु तैयार हो गई ।

'तुम जाओ । मैं कालेज गेट से थोड़ी दूर चाय वाले की दुकान पर मिलूंगा ।'

सुशील ने कहा और तेजी से चला गया ।

सुशील की सांस फूल रही थी । वह बार-बार पलटकर देख रहा था कि किसी लड़के ने उसे मधु से बात करते देख तो नहीं लिया ।

सड़क पर आकर उसने रिक्शा ले लिया ।

तभी मधु की आवाज आयी ।

'मैं आ गयी । अब बताइए ?'

सुशील ने रिक्शे की ओर इशारा किया । मधु रिक्शे पर बैठ गयी । सुशील ने इधर-उधर नजर डाली और रिक्शे पर बैठ गया ।

रिक्शा चल पड़ा ।

थोड़ी देर बाद रिक्शा आबादी से दूर निकल गया । रास्ते के दोनों ओर खेत थे ।

सुशील के चेहरे पर इत्मीनान झलक पड़ा । उसने मधु से कहा—

'अब आराम से बैठो ।'

'अभी तक क्या तकलीफ थी ?'

'मैं घबड़ा रहा था कि कहीं किसी लड़के ने हमें देख तो नहीं लिया ।'

'यह डर कब तक लगा रहेगा ?'

'हमें जल्दी ही ऐसी स्थिति पैदा करनी चाहिए जिससे यह स्थिति न रहे ।'

'कैसी स्थिति ?'

'तुम नहीं समझतीं । बोर मत किया करो ।' सुशील ने झुंझला कर कहा ।

'उन परिस्थितियों को तो आप ही पैदा कर सकते हैं । किसी ने रोका है ?'

'अभी रंजन भाई को अपनी बहनों की शादी करनी है । इसके बाद उनकी शादी होगी । जब कहीं सोच सकता हूं ।' सुशील बोला—'रंजन भाई का रोमांस चल रहा है । बहुत अच्छी लड़की है । जिस दिन वह तुम्हारे पास आये थे, उसी दिन वह मुझे कल्पना के घर ले गये थे ।'

'सारा इन्तजाम रंजन भाई ने ही किया है । मेरा मतलब है हम लोगों के रहने का ।'

'हां मधु ! आज के जमाने में ऐसे दोस्त कहां मिलते हैं । मेरी मामूली इच्छा के

लिए हजारों रुपये फूंक दिये। लेकिन एक बात बताओ। नरेन्द्र सिन्हा साहब के यहां से…'

'चाची ने मेरा रहना दूभर कर रखा है। जब से मैंने हाई स्कूल पास किया है, अकारण ही मेरे पीछे पड़ी रहती हैं। मैंने आपको बताया नहीं। मैं खुद वहाँ रहना नहीं चाहती। शायद चाची मुझ पर संदेह करती हैं…।'

'कैसा संदेह ?'

'यही कि चाचा का मेरी ओर झुकाव है।'

'तुम्हारे माता-पिता को यहाँ रहने पर कोई परेशानी तो न होगी ?'

'नहीं। वे लोग तो बहुत खुश होंगे।'

और हुआ भी यही।

कच्ची दीवारें जिस पर फूंस का छप्पर पड़ा हुआ था। मधु की माँ ने सुशील की बहुत खातिर की। लेकिन इस खातिरदारी में बराबरी की बजाय सम्मान की भावना अधिक थी।

जिस रिक्शे पर वे गये गये थे उसी पर लौट आये। मधु और उसकी माँ रिक्शे पर थीं और सुशील भोलू के साथ पैदल था। सामान था ही क्या ? जो कुछ था, झोंपड़े में बन्द कर दिया। थोड़ा-सा अनाज साथ ले लिया।

सूरज डूबते-डूबते वे शहर में पहुँच
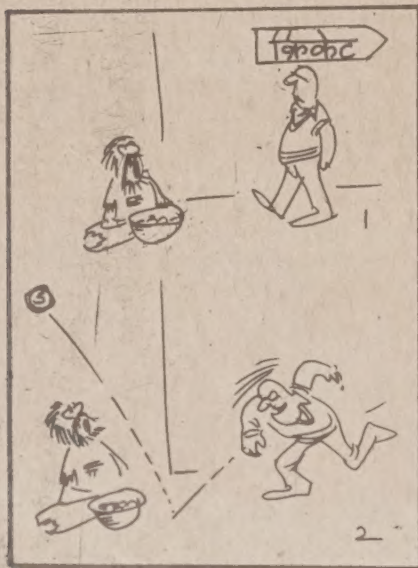
गये।

रंजन क्वार्टर के सामने कुर्सी पर बैठा था। जैसे ही रिक्शा क्वार्टर के सामने पहुंचा, उसने आगे बढ़कर मधु की माँ का अभिवादन किया और मधु से बोला—

'वह हजरत कहाँ हैं ?'

'पिताजी के साथ पैदल आ रहे हैं।'

'अच्छा,' रंजन के होठों पर मुस्कराहट दौड़ गयी। उसने कहा, 'भई, मुझे तो कुछ पता नहीं। फिर भी उल्टा-सीधा जो इंतजाम कर सकता था, कर दिया है। कपड़े बक्स में रखे हैं। मशीन से सी लेना।'

दो बक्सों में कपड़े रखे थे। बिना सिले हुए। कुछ मर्दाने कपड़े थे। मधु प्रश्न-भरी नजरों से रंजन की ओर देखने लगी।

मधु माँ के साथ अन्दर आयी और बच्चों की तरह आश्चर्य से सामान को देखने लगी। रंजन हर चीज के बारे में बताने लगा। मधु को लगा कि ऐसी कोई भी चीज नहीं है, जो घर में न हो।'

'ये पिताजी के लिए हैं। तुम्हारे माता-पिता को भी उसी स्टैण्डर्ड से रहना चाहिए जिस स्टैण्डर्ड से तुम रह रही हो।'

'रंजन भाई…!' मधु ने कुछ कहना चाहा। लेकिन भावावेश में कुछ कह न सकी। उसका गला रुंध गया।

सुशील भाई को इस समय चाय पीने की आदत है। फर्स्ट क्लास चाय बना लो। कुछ टोस्ट सेक लो। वह आ रहा होगा… भूखा होगा।'

मधु किचिन में चली गयी।

थोड़ी देर बाद सुशील और भोलू आ गये। रंजन ठेठ देहाती भाषा में मधु की मां से बातें कर रहा था। ऐसा लगता था जैसे दोनों एक-दूसरे से वर्षों से परिचित हों।

मधु चाय बना रही थी।

सुशील ने पूछा, 'सामान देख लिया ?'

'सब देख चुकी हूं।' मधु बोली। उस के स्वर में बच्चे जैसी चंचलता थी जो अपने खिलौने के बारे में जानने के बाद दूसरों पर अपनी जानकारी का रौब डालता है।

'रंजन भाई को देखा तुमने ?' सुशील ने धीरे से पूछा।

'मैंने ऐसा आदमी न कभी देखा था और न पढ़ा था। वह तो देवता है। मैं समझ नहीं पा रही कि उनके अहसान का बदला…।

'खबरदार !' सुशील ने होठों पर उंगली रखकर कहा, 'ऐसी बात कभी मुँह से न निकालना। वरना गजब हो जाएगा।'

तभी जोर से हंस…
मधु और सुशील झाँक…
मधु के माता-पिता के…
था। उन्हीं के लहजे में…

'चाय ले जाओ…
बुलाकर डाटेंगे।'

मधु ने ट्रे में चाय…
और ट्रे लेकर चली ग…
इशारे से चाय रखने…

'सुशील कहाँ है…

मधु ने सुशील को…

'तुम यहां से…
करोगी ?' रंजन ने म…

'पास ही तो है…
करूंगी।'

'नहीं तुम पैदल…
ने सुशील की ओर…
लिए रिक्शे का प्रबन्ध…

'जी अच्छा !'

'तुमने कल्पना के…
बताया है ?' रंजन ने…

'संक्षेप में। लेकि…
बता दी हैं।'

'ठीक है। कल…

मधु का चेहरा…

'चलिए मास्टर…
रंजन ने सुशील की…
हुए कहा।

सुशील रंजन…
आया। बाहर आकर…
किल खड़ी थी। दोनों…

रात को जब दो…
रंजन ने कहा—

'अब तुम्हें मेरा…

'बताइए !'
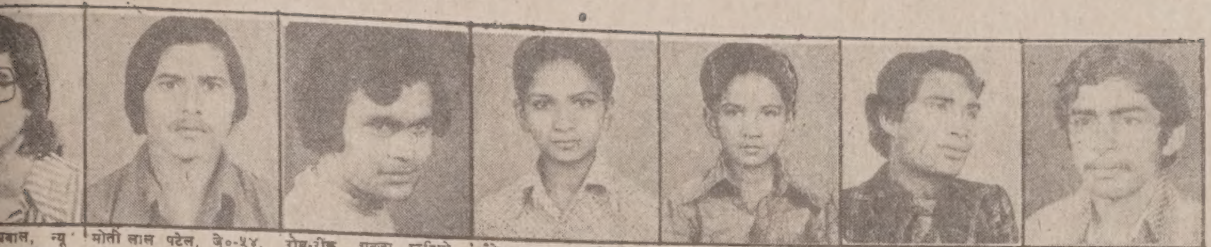
मोती लाल पटेल, जे०-५४, कृष्णा मार्ग, सी० स्कीम, जयपुर, १८ वर्ष, लड़कों से दोस्ती करना, गप्पें मारना, दौड़ लगाना।

रोमू-रीकू, ग्रहूजा स्टूडियो कुरुक्षेत्र, १६ वर्ष, मित्रों को परखना, लोगों को हंसाना, शरारत करना, पत्रिका का हर अंक जमा करना।

शैलेन्द्र गुप्ता, खानपुरी गेट, होशियारपुर, १२ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, तैरना, लड़ना, पढ़ना, डाक-टिकट संग्रह करना।

बिक्रान्त गुप्ता, खानपुरी गेट, होशियारपुर, १२ वर्ष, खेलना, पढ़ना, बड़ों का आदर करना, भारत के तीर्थ स्थानों में घूमना-फिरना।

ओ० पी० पुनिया, वधवा सॉल्वेन्ट इन्ड, पिपली रोड, कुरुक्षेत्र, २२ वर्ष, दोस्ती करना, दीवाना पढ़कर दीवाना होना, एक्टर बनना।

विजय कुमार ग्रोंडरानी, म० नं० ५२५, ठाकर-गुजर का रास्ता जयपुर (राज०), १७ वर्ष, खुद हंसना व दूसरों को हंसाना।

त्रिलोकी नाथ पाठक, मोती लाल नेहरू इन्जीनियरिंग कालिज इलाहबाद (यू०पी०), २२ वर्ष, मौड बनना, ग्राधुनिक बनना।

राज कुमार सोनिया, बैंकरी नम्बर ११, कोर्ट रोड, शिमला, २१ वर्ष, पढ़ना, सैर करना, अपने आपको बड़ा बनाना।

जसवन्त, सूफीयां मौहल्ला मोती बाजार, फगवाड़ा (पंजाब), २२ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, शतरंज खेलना तथा हंसना।

नरेश कुमार आर्य, हाइडिल कालोनी, विक्टोरिया पार्क, मेरठ, १७ वर्ष, पढ़ना, क्रिकेट खेलना, लिखना-पढ़ना और सेहत बनाना।

दिगम्बर सिंह, काला कोठी रानीखेत रोड, राम नगर नैनीताल (उ० प्र०), १७ वर्ष, फुटबाल खेलना, बच्चों से प्यार करना।

सुधीर कुमार, एम० प्रसाद पर्सनल मैनेजर स्टेट बैंक आफ इंडिया, गोरखपुर, ११ वर्ष, क्रिकेट खेलना, आपस में मेल रखना।

विजय चन्द्र द्वारा श्री उमाशंकर प्रसाद, (एल.जी.सी.) चन्दवारा, पानी टंकी चौक, मुजफ्फरपुर (बिहार), १७ वर्ष, सिनेमा देखना।

राजेश रामदास जैन, परवारपुरा, इतवारी, नागपुर, १२ वर्ष, पढ़ाई करना, क्रिकेट खेलना, एक्टर बनने की सोचना।

सुरेशचन्द्र पालीवाल गिरधारी जी, गांव व पोस्ट केसूली (राज०), १८ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, सेवा करना, पढ़ना-लिखना।

रूपेश कुमार शाक्य, ललितपुर दमकल आगे, ज्योति निवास काठमाण्डो नेपाल, २० वर्ष, संगीत सुनना, और गाना गाना।

विनोद बहादुर थापा, ४/७, वालुवाटार काठमाण्डो नेपाल, १२ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, गिटार बजाना, चेस खेलना, गीत सुनना।

चरणदास गर्ग द्वारा बृजलाल राजकुमार करियाना मर्चेन्टस संजरिया (मण्डी), जिला श्री गंगानगर (राजस्थान), १६ वर्ष, लिखना-पढ़ना।

ईश्वर बांसल 'पप्पी', महावीर प्रशाद हलवाई, फौजी रोड, कोटकपूरा (पंजाब), १६ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, उपन्यास पढ़ना।

मुहम्मद नसीम, कूचा भीतर राय बरेली, १८ वर्ष, पढ़ना, घूमना, पिक्चर देखना, टी० वी० पर फिल्म देखना और आवारा बनना।

उमा शंकर, लखन लाल चौरसिया सिविल कोर्ट (कचहरी) मुंगेर, १४ वर्ष, घूमना, पत्र-मित्रता करना, साईकिल चलाना।

मो० यूसुफ, गुदरी चौक, रांची, २५ वर्ष, लड़कों का फोटो खींचना, लड़कों के साथ घूमना, दौड़ना, मोटर ड्राइवरी करना।

राम बाबू विद्यार्थी, एम० ई०/१३७ अनवर गंज रेलवे कालोनी, कानपुर, १६ वर्ष, पढ़ना और अच्छे दोस्तों की संगत करना।

लक्ष्मण दास रेडिमेड, पोस्ट धमतरी, जिला रायपुर, २३ वर्ष, हंसना-हंसाना, पत्र-मित्रता करना, आपस में प्रेम रखना।
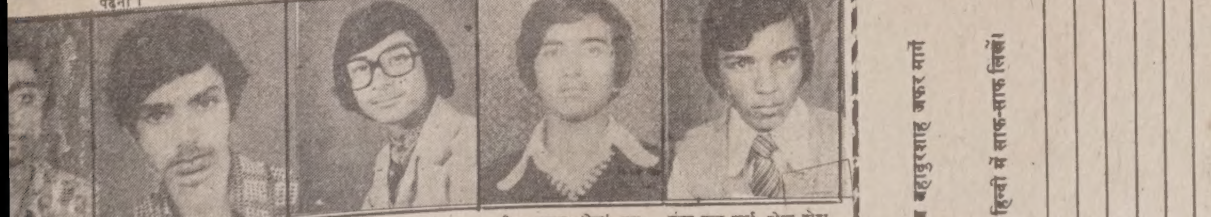
सुनील कुमार द्वारा योगेन्द्र प्रसाद, सीता भवन के पास संबर टोली गली पटना, १६ वर्ष, पढ़ना, पत्र-मित्रता करना।

ज्ञानेन्द्र आर० स्थापित, सम्पादक यती कलिंग, पोस्ट बाक्स नं० १७३०, काठमाडो नेपाल, २० वर्ष, पत्रिकायें पढ़ना।

सुनील कुमार 'रेणु' एल० जी० कालोनी, कडरू, रांची बिहार, १८ वर्ष, गीत सुनना, पत्र-मित्रता करना, बैडमिंटन खेलना।

भंवर लाल शर्मा, पोस्त डोडा ठेकेदार मारवाड़ जंक्शन, २१ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, पान खाना, घूमना-फिरना, गीत सुनना।

दीवाना फ्रेंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रेंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा। लिफाफे के कोने पर फ्रेंड्स लिखना व फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

हमारा पता : दीवाना ८-ब बहादुरशाह जफर मार्ग नई दिल्ली-११०००२

कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ____
पता ____
आयु ____ शौक ____

...ना फ्रेंड्स क्लब

...लिमिटेड के लिए पन्नालाल ... एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

साप्ताहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

२८ दिसम्बर से ३ जनवरी ७९ तक

मेष : यह सप्ताह आपके लिए पर्याप्त अच्छा रहेगा, किसी-किसी समय परेशानी काफी रहेगी, परन्तु भाग्य आपका साथ देगा और समस्याओं का समाधान होता जायेगा, घरेलू योजनाओं पर व्यय अधिक होगा।

वृष : इन दिनों संघर्षपूर्ण हालात बने रहेंगे फिर भी यह सप्ताह अच्छा रहेगा और आपको सफलता भी मिलती रहेगी, व्यर्थ के झंझटों में परेशानी, यात्रा सावधानी से करें, दौड़धूप भी काफी रहेगी।

मिथुन : इस सप्ताह के दौरान आपको संघर्ष करना पड़ेगा, दैनिक कार्यक्रमों में परिवर्तन लाना होगा जिससे कामकाज में निश्चय ही सुधार होगा और लाभ भी अच्छा होने लगेगा।

कर्क : विगत दिनों की अपेक्षा यह सप्ताह अच्छा रहेगा और हालात में भी सुधार होना महसूस होगा, लाभ अच्छा होगा, काम अच्छा होगा, व्यापार में सुधार एवं परिश्रम भी काफी करना पड़ेगा।

सिंह : आय में रुकावट या होकर भी हाथ से जाती रहेगी, व्यय यथार्थ होने पर भी अधिक होता महसूस होगा, विरोधी अधिक परन्तु सामना न कर सकेंगे, स्वास्थ्य के बारे में चिन्ता, घरेलू परेशानी भी बनी रहेगी।

कन्या : व्यापार से यथार्थ लाभ होता रहेगा और आमदनी भी ठीक समय पर मिलती रहेगी, कोई रुका हुआ और जरूरी काम बन जावेगा, विरोधी पक्ष से सावधान रहें, नया काम आरम्भ न करें।

तुला : यह सप्ताह पर्याप्त अच्छा रहेगा, व्यय यथार्थ होने पर भी अधिक होता महसूस होगा, विरोधी अधिक परन्तु सामना न कर सकेंगे, स्वास्थ्य के बारे में चिन्ता, घरेलू परेशानी भी बनी रहेगी।

वृश्चिक : सरकारी कामों में सफलता पाने के लिए काफी संघर्ष एवं सूझबूझ से काम लेना होगा, दौड़धूप भी काफी रहेगी, अफसरों की ओर से कुछ परेशानी, नई एवं घरेलू योजनाओं पर व्यय होगा।

धनु : इस सप्ताह में शुभ अशुभ मिश्रितफल प्राप्त होते रहेंगे, धर्म पर विश्वास बढ़ेगा और बड़े लोगों के परामर्श से कार्य सिद्ध हो सकेंगे, परन्तु कुसंगति से सावधान रहें, अन्यथा किसी बने काम में बिगाड़ हो सकता है।

मकर : विरोधता अधिक रहेगी फिर भी शत्रु आप पर हमला न कर सकेगा, सहयोगी आपके अंगसंग रहेंगे, और आप हर कठिनाई पर बहुत ही आसानी से काबू पा लेंगे, किसी समय उदासी भी काफी रहेगी।

कुम्भ : यह सप्ताह भी प्रायः पहले जैसा ही रहेगा, कुछ नई पुरानी समस्यायें जाती रहेंगी, परिश्रम से काम करने पर बिगड़े हुए एवं जरूरी काम भी पूरे हो जायेंगे, यात्रा लाभप्रद रहेगी, आय में वृद्धि होगी।

मीन : अफसरों से मेल जोल, यात्रा सफल रहेगी, सरकारी कामों में सफलता मिल जावेगी, कुछ अधूरे काम पूरे हो जावेंगे, आय आशा अनुसार परन्तु व्यय आशा से अधिक होगा।

विवाह जरूर करूंगी—लेकिन जल्दी नहीं

सिम्पल कापड़िया

विजय भारद्वाज

डिम्पल की बहन चुन्नी भाई कापड़िया की सुपुत्री और भूतपूर्व सुपर स्टार राजेश खन्ना की साली सिम्पल, आज की चर्चित नवोदिताओं में से एक हैं। अपनी बहन के विवाह होने और उसके फिल्म उद्योग छोड़ने के बाद सिम्पल ने फिल्म लाइन पकड़ ली। इसके पीछे प्रोत्साहन था राजेश खन्ना का। या यूं कहा जाये कि सिम्पल को फ़िल्मों में राजेश खन्ना ही लाया है तो गलत नहीं होगा।

उन दिनों राजेश खन्ना का सितारा बुलन्दियों पर था और सिम्पल का रंग-रूप, यौवन भी पूरी चढ़ाई पर था। सिम्पल ने भी मौके का भरपूर लाभ उठाया और देखते-देखते ही चर्चित अभिनेत्री बन बैठीं। फिल्म उद्योग में विशेष कर लड़कियों का जमना और फिर अभिनेत्री बनना बड़ा टेढ़ा काम है। नवोदिताओं को फिल्में पाने के लिये कितने धक्के खाने पड़ते हैं, कितनी ऊंची नीची राहें पार करनी पड़ती हैं, यह सब लिखना आवश्यक नहीं हैं। लेकिन सिम्पल को ऐसे किसी संघर्ष की आवश्यकता नहीं पड़ी। फिल्म 'अनुरोध' से लेकर आज तक सिम्पल सफलता की ओर अग्रसर हैं। दीवाना के लिये की गई विशेष मुलाकात में कुछ बातें हुई। वह पेश हैं!

मैं : 'यह कहां तक सच है कि आप अ[illegible] तक अपने जीजा जी (राजेश खन्ना) की अप्रोच के सहारे खड़ी हैं। उनकी वजह [illegible] ही आपको फिल्में मिलती हैं?'

सिम्पल :—'यह सरासर गलत है कि राजेश खन्ना के सम्बन्धों के सहारे ही [illegible] फिल्म उद्योग में जमी हुई हूँ! हां!

उन्होंने मेरी मदद अवश्य की थी, जिसे मैं कभी नहीं भुला सकती।'

मैं : 'आपके पिताजी द्वारा निर्मित फिल्म 'मजनूं' खटाई में क्यों पड़ी है [illegible] जबकि उसका श्री गणेश (मुहूर्त) पर मोटी रकम खर्च की जा चुकी है। क्या राजेश खन्ना के और आपके सम्बन्धों में कोई दरार पड़ गई है?'

सिम्पल : 'यह सब अफवाहें हैं, हमारे सम्बन्ध आज भी मधुर हैं। आपको एक बात और भी बता दूं, मैं अधिकतर समय अपनी बहन के घर पर ही काटती हूं। मुझे दीदी 'डिम्पल' से बेहद प्यार है।'

मैं : 'आपका और महेन्द्र सिन्धु का नाम एक साथ जोड़ा जा रहा है क्या कोई··· रोमांस···वगैरह···'

'सिम्पल : 'आ गये ना चक्कर में [illegible] भई वह मेरी अधिकतर फिल्मों में नायक हैं [illegible] हंसने, घुलने-मिलने को लोग गलत नाम दे[illegible] हैं। ही इज ओनुली माई ब्वाय फ्रेंड'।

मैं :—'आपकी आने वाली विशेष फिल्में कौन-कौन सी हैं?'

सिम्पल : 'सभी के नाम तो माईन्ड [illegible] नहीं हैं। हाँ! कुछ एक फिल्में याद हैं चोर देवता, दूसरी आँख, मर्डर इन ट्रेन ७८६ आ[illegible] शाका आदि···वैसे छोटी बड़ी सभी फिल्में लगभग डेढ़ दर्जन होंगी।

मैं : 'आपकी विवाह के बारे में क्या राय है? कब करेंगी आप शादी?'

सिम्पल : 'विवाह जरूर करूंगी लेकिन···जल्दी नहीं है मुझे।

जिस दिन भी मेरी पसन्द का नौजवान मिल गया उसी दिन फेरे ले लूंगी।

मैं : 'आप कैसा पति चाहती है?'

सिम्पल : विवाह··के बाद भी मुझे पूर्ण सुरक्षा प्रदान कर सके।'

मैं : 'अच्छा, सहयोग के लिये धन्यवाद'

सिम्पल : 'दीवाना बीकली के रीडर्स को मेरी तरफ से नमस्ते'।